



Mr.vishal rath

16 Oct 1985

05:50 PM

Bhubaneswar

Model: Web-KundliPhal

Order No: 120319501

सूचना

ज्योतिष एक विज्ञान है जिसके अंतर्गत ग्रहों का मानव जीवन पर पड़ने वाले प्रभावों का अध्ययन किया जाता है। इसके प्रभावों की भविष्यवाणी करने हेतु ग्रहों की स्थिति एवं इसके बल की गणना की जाती है। जन्मपत्रिकाओं की गणना अति सटीक है जिसमें बिल्कुल सही रेखांश प्रयुक्त हुए हैं। सामान्य तौर पर इसमें चित्रापक्षीय अयनांश का प्रयोग किया जाता है जबतक कि आप दूसरे अयनांश का विकल्प न मांगें।

कम्प्यूटर जन्मपत्रिकाएं मुख्य रूप से पाराशरी पद्धति पर आधारित है। हालांकि इसमें ताजिक पद्धति, जैमिनी पद्धति, कृष्णमूर्ति पद्धति, प्रश्नशास्त्र एवं पाश्चात्य पद्धतियों का भी ज्योतिषीय गणना में मिश्रण किया गया है। फलादेश मुख्य रूप से विभिन्न प्राचीन शास्त्रों जैसे बृहत् पराशर, होराशास्त्र, मानसागरी, सारावली, जातकभरणम, बृहत् जातक, फलदीपिका, जातक पारिजात के अनुरूप, साथ ही अपने अनुभवों का भी समावेश करके बनाया गया है। फिर भी, ज्योतिष का मार्गदर्शन लेकर हम अपने भविष्य का संकेत मात्र प्राप्त कर सकते हैं। सिर्फ सृष्टि के निर्माता ब्रह्मा ही यह भविष्यवाणी कर सकते हैं कि आनेवाले समय में क्या घटित होगा ?

यह जन्मपत्रिका जन्म तिथि, जन्म समय एवं जन्म स्थान पर आधारित है जो कि जातक ने हमें उपलब्ध कराया है। अतः आंकड़ों की सटीकता से संबंधित हमारी कोई जिम्मेवारी नहीं है। ज्योतिषीय गणना एवं फलादेश जातक द्वारा उपलब्ध कराए गए विवरण के ऊपर आधारित है। जन्मपत्रिका में दिए गए फलादेश जातक के लिए सिर्फ संकेत मात्र है जिस पर जातक को सावधानीपूर्वक अमल करना चाहिए न कि हूबहू जैसा फलादेश में कहा गया है, बिना सोचे समझे उसे अपने जीवन में लागू करने की कोशिश करनी चाहिए। जन्मपत्रिका के विभिन्न पृष्ठों में दी गयी सूचनाएं किसी भी प्रकार के विवाद अथवा वैधानिक कार्यवाही के लिए उपयुक्त नहीं है। अतः जातक की स्वयं की कार्यवाही से उत्पन्न हुए किसी भी क्षति के लिए हम उत्तरदायी नहीं है।

लिंग _____: पुल्लिंग
जन्म तिथि _____: 16/10/1985
दिन _____: बुधवार
जन्म समय _____: 17:50:00 घंटे
इष्ट _____: 30:19:52 घटी
स्थान _____: Bhubaneswar
राज्य _____: Odisha
देश _____: India

अक्षांश _____: 20:13:00 उत्तर
रेखांश _____: 85:50:00 पूर्व
मध्य रेखांश _____: 82:30:00 पूर्व
स्थानिक संस्कार _____: 00:13:20 घंटे
ग्रीष्म संस्कार _____: 00:00:00 घंटे
स्थानिक समय _____: 18:03:20 घंटे
वेलान्तर _____: 00:14:23 घंटे
साम्पातिक काल _____: 19:43:11 घंटे
सूर्योदय _____: 05:42:03 घंटे
सूर्यास्त _____: 17:22:21 घंटे
दिनमान _____: 11:40:19 घंटे
सूर्य स्थिति(अयन) _____: दक्षिणायन
सूर्य स्थिति(गोल) _____: दक्षिण
ऋतु _____: शरद
सूर्य के अंश _____: 29:25:36 कन्या
लग्न के अंश _____: 08:58:44 मेष

अवकहड़ा चक्र

लग्न-लग्नाधिपति _____: मेष - मंगल
राशि-स्वामी _____: वृश्चिक - मंगल
नक्षत्र-चरण _____: विशाखा - 4
नक्षत्र स्वामी _____: गुरु
योग _____: आयुष्मान
करण _____: गर
गण _____: राक्षस
योनि _____: व्याघ्र
नाड़ी _____: अन्त्य
वर्ण _____: विप्र
वश्य _____: कीटक
वर्ग _____: सर्प
युँजा _____: मध्य
हंसक _____: जल
जन्म नामाक्षर _____: तो-तोरल
पाया(राशि-नक्षत्र) _____: लौह - ताम्र
सूर्य राशि(पाश्चात्य) _____: तुला



FUTUREPOINT
Astro Solutions



पंचांग

दादा का नाम _____ :
 पिता का नाम _____ :
 माता का नाम _____ :
 जाति _____ :
 गोत्र _____ :

कैलेंडर	वर्ष	मास	तिथि/प्रविष्टे
राष्ट्रीय	शक : 1907	आश्विन	24
पंजाबी	संवत : 2042	आश्विन	31
बंगाली	सन् : 1392	आश्विन	30
तमिल	संवत : 2042	पुरुटासी	30
केरल	कोल्लम : 1161	कन्नी	30
नेपाली	संवत : 2042	आश्विन	31
चैत्रादि	संवत : 2042	आश्विन	शुक्ल 3
कार्तिकादि	संवत : 2042	आश्विन	शुक्ल 3

पंचांग

सूर्योदय कालीन तिथि _____ : 3
 तिथि समाप्ति काल _____ : 23:29:08
 जन्म तिथि _____ : 3
 सूर्योदय कालीन नक्षत्र _____ : विशाखा
 नक्षत्र समाप्ति काल _____ : 19:44:13 घंटे
 जन्म योग _____ : विशाखा
 सूर्योदय कालीन योग _____ : प्रीति
 योग समाप्ति काल _____ : 10:27:01 घंटे
 जन्म योग _____ : आयुष्मान
 सूर्योदय कालीन करण _____ : तैत्ति
 करण समाप्ति काल _____ : 13:09:11 घंटे
 जन्म करण _____ : गर
 भयात _____ : 48:33:51
 भभोग _____ : 53:19:23
 भोग्य दशा काल _____ : गुरु 1 वर्ष 5 मा 1 दि

घात चक्र

मास _____ : आश्विन
 तिथि _____ : 1-6-11
 दिन _____ : शुक्रवार
 नक्षत्र _____ : रेवती
 योग _____ : व्यतिपात
 करण _____ : गर
 प्रहर _____ : 1
 वर्ग _____ : गरुड़
 लग्न _____ : वृश्चिक
 सूर्य _____ : मकर
 चन्द्र _____ : वृष
 मंगल _____ : कुम्भ
 बुध _____ : वृश्चिक
 गुरु _____ : मीन
 शुक्र _____ : मेष
 शनि _____ : कर्क
 राहु _____ : वृष

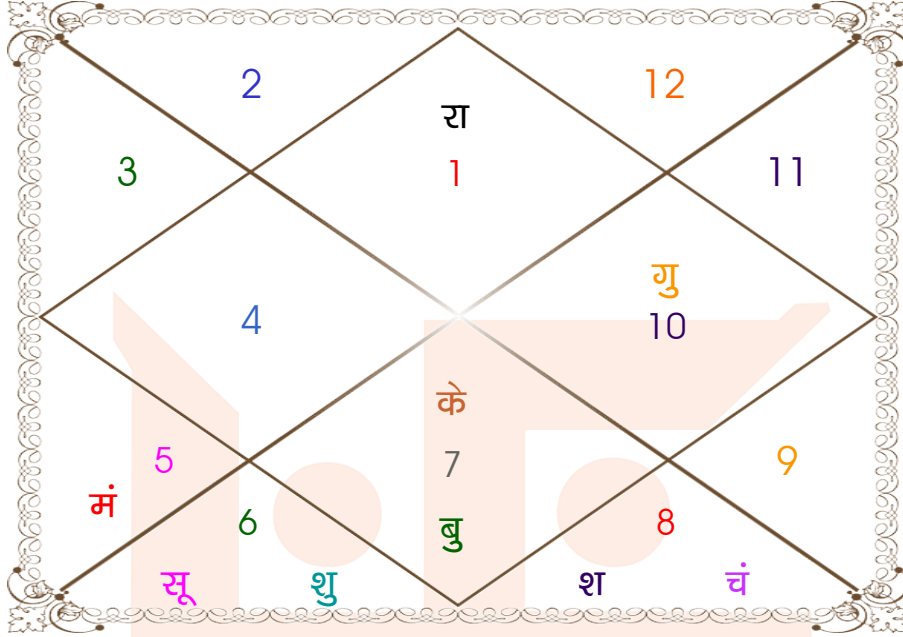


FUTUREPOINT
 Astro Solutions

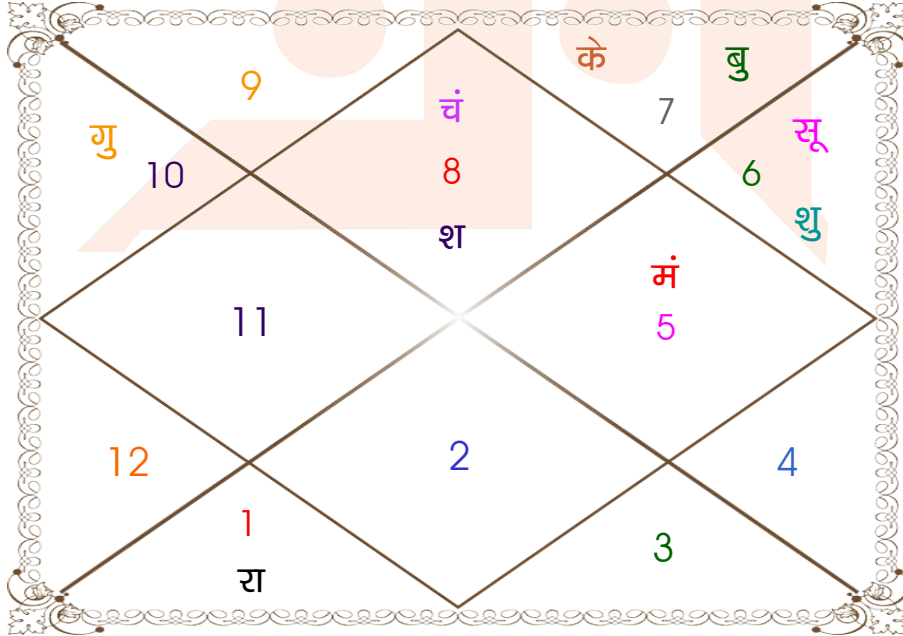


जन्म कुण्डली

लग्न कुण्डली



चन्द्र कुण्डली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



लग्न कुण्डली और दशा

लग्न कुंडली

	रा		
	ल		
गु			मं
	श	के	शु
	चं	बु	सू

लग्न कुंडली

	रा		
	ल		
		गु	
मं	सू	बु	चं
शु	के	श	

विंशोत्तरी
गुरु 1वर्ष 5मा 1दि
गुरु

16/10/1985

19/03/2091

गुरु	19/03/1987
शनि	19/03/2006
बुध	19/03/2023
केतु	19/03/2030
शुक्र	19/03/2050
सूर्य	18/03/2056
चन्द्र	19/03/2066
मंगल	19/03/2073
राहु	19/03/2091

योगिनी
धान्या 0वर्ष 3मा 5दि
भामरी

22/01/2022

22/01/2026

भामरी	03/07/2022
भद्रिका	22/01/2023
उल्का	22/09/2023
सिद्धा	02/07/2024
संकटा	23/05/2025
मंगला	03/07/2025
पिंगला	22/09/2025
धान्या	22/01/2026



FUTUREPOINT
Astro Solutions



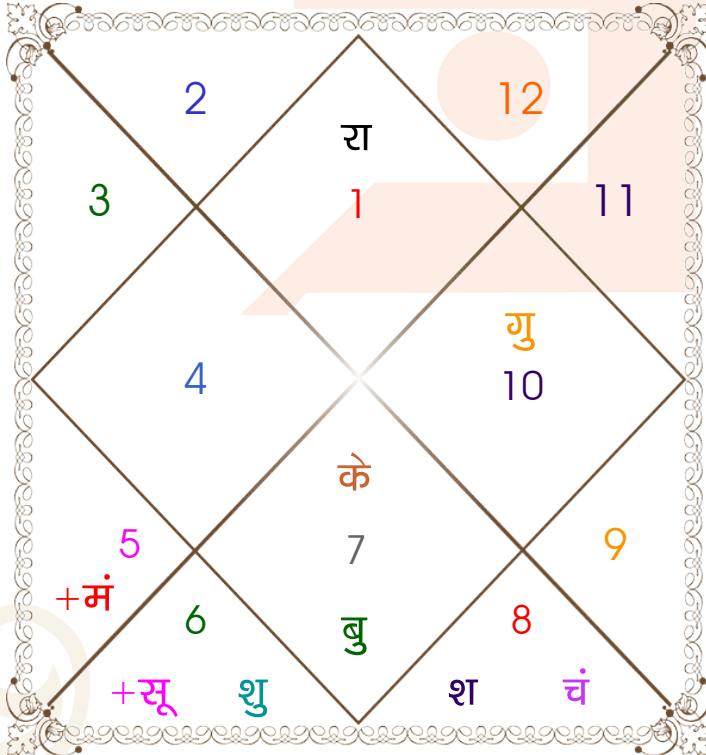
ग्रह स्पष्ट तथा उनकी स्थिति

ग्रह	व	अ	राशि	अंश	गति	नक्षत्र	पद	नं.	रा	न	अं.	स्थिति
लग्न			मेष	08:58:44	435:07:02	अश्विनी	3	1	मंगल	केतु	गुरु	---
सूर्य			कन्या	29:25:36	00:59:32	चित्रा	2	14	बुध	मंगल	शनि	सम राशि
चंद्र			वृश्चि	02:08:58	14:56:04	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	नीच राशि
मंगल			सिंह	29:21:40	00:37:44	उ०फाल्गुनी	1	12	सूर्य	सूर्य	राहु	मित्र राशि
बुध			तुला	15:06:34	01:29:49	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	केतु	मित्र राशि
गुरु			मक	13:45:03	00:02:35	श्रवण	2	22	शनि	चंद्र	राहु	नीच राशि
शुक्र			कन्या	06:18:27	01:14:19	उ०फाल्गुनी	3	12	बुध	सूर्य	बुध	नीच राशि
शनि			वृश्चि	02:45:03	00:06:21	विशाखा	4	16	मंगल	गुरु	राहु	शत्रु राशि
राहु			मेष	15:33:39	00:00:48	भरणी	1	2	मंगल	शुक्र	सूर्य	शत्रु राशि
केतु			तुला	15:33:39	00:00:48	स्वाति	3	15	शुक्र	राहु	शुक्र	सम राशि
हर्ष			वृश्चि	21:32:01	00:02:35	ज्येष्ठा	2	18	मंगल	बुध	शुक्र	---
नेप			धनु	07:30:34	00:01:06	मूल	3	19	गुरु	केतु	राहु	---
प्लूटो			तुला	10:33:23	00:02:24	स्वाति	2	15	शुक्र	राहु	शनि	---
दशम भाव			मक	00:15:27	--	उत्तराषाढ़ा	--	21	शनि	सूर्य	राहु	--

व - वकी स - स्थिर
अ - अस्त पू - पूर्ण अस्त
राहु : स्पष्ट

चित्रपक्षीय अयनांश : 23:39:19

लग्न-चलित



चलित तथा निरयण भाव चलित

चलित अंश

भाव	भाव संधि	भाव मध्य
1	मीन 22:31:31	मेष 08:58:44
2	मेष 22:31:31	वृष 06:04:18
3	वृष 19:37:06	मिथुन 03:09:53
4	मिथुन 16:42:40	कर्क 00:15:27
5	कर्क 16:42:40	सिंह 03:09:53
6	सिंह 19:37:06	कन्या 06:04:18
7	कन्या 22:31:31	तुला 08:58:44
8	तुला 22:31:31	वृश्चिक 06:04:18
9	वृश्चिक 19:37:06	धनु 03:09:53
10	धनु 16:42:40	मकर 00:15:27
11	मकर 16:42:40	कुम्भ 03:09:53
12	कुम्भ 19:37:06	मीन 06:04:18

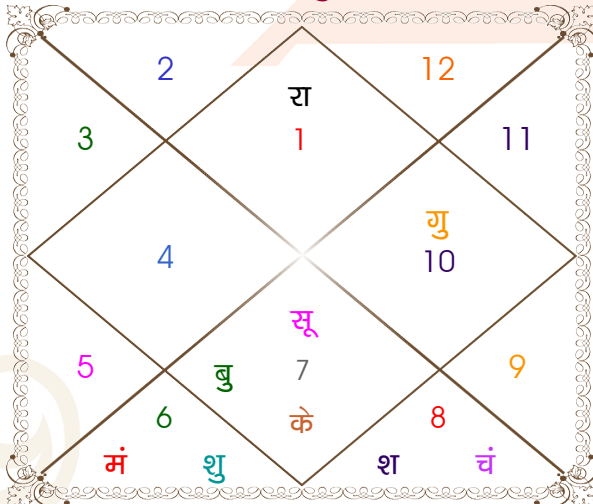
निरयण भाव चलित

भाव	राशि	अंश
1	मेष	08:58:44
2	वृष	09:32:13
3	मिथुन	05:17:43
4	कर्क	00:15:27
5	कर्क	27:58:02
6	कन्या	01:13:01
7	तुला	08:58:44
8	वृश्चिक	09:32:13
9	धनु	05:17:43
10	मकर	00:15:27
11	मकर	27:58:02
12	मीन	01:13:01

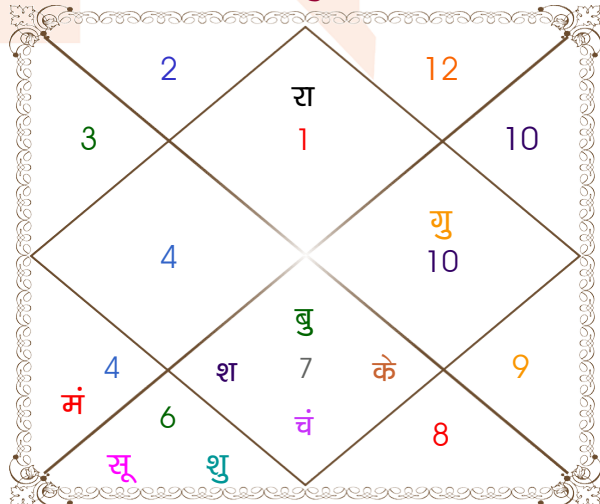
तारा चक्र

जन्म	सम्पत्	विपत्	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पूर्वाभाद्रपद	उभाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पूर्वाफाल्गुनी	उभाफाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति

चलित कुंडली



भाव कुंडली



FUTUREPOINT
Astro Solutions



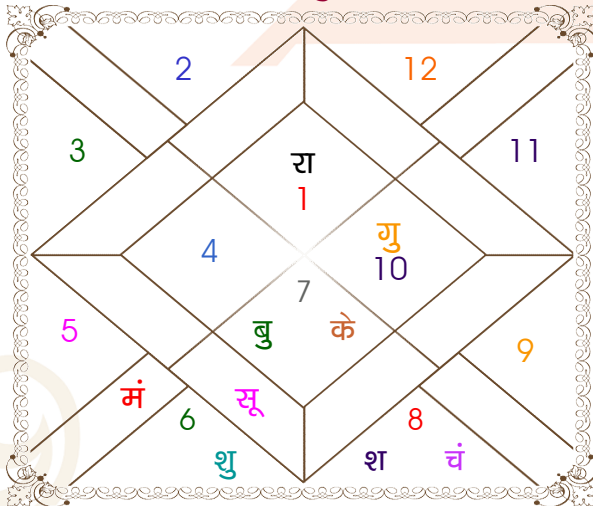
कारक,अवस्था,रश्मि

ग्रह	----- कारक -----	----- अवस्था -----	
	चर	स्थिर	बालादि दीप्तादि शयनादि रश्मि ग्रह बल
सूर्य	आत्मा	पितृ	बाल शक्त गमन 0.70 56 %
चंद्र	कलत्र	मातृ	मृत भीत सभा 0.05 51 %
मंगल	अमात्य	भातृ	मृत मुदित कौतुक 1.16 37 %
बुध	भातृ	ज्ञाति	युवा मुदित कौतुक 5.55 59 %
गुरु	मातृ	धन	युवा भीत भोजन 0.41 25 %
शुक्र	पुत्र	कलत्र	वृद्ध भीत कौतुक 1.23 62 %
शनि	ज्ञाति	आयु	मृत खल नेत्रपाणि 4.65 30 %
राहु	---	ज्ञान	युवा खल सभा 0.00 51 %
केतु	---	मोक्ष	युवा शान्त उपवेशन 0.00 51 %
कुल			13.75

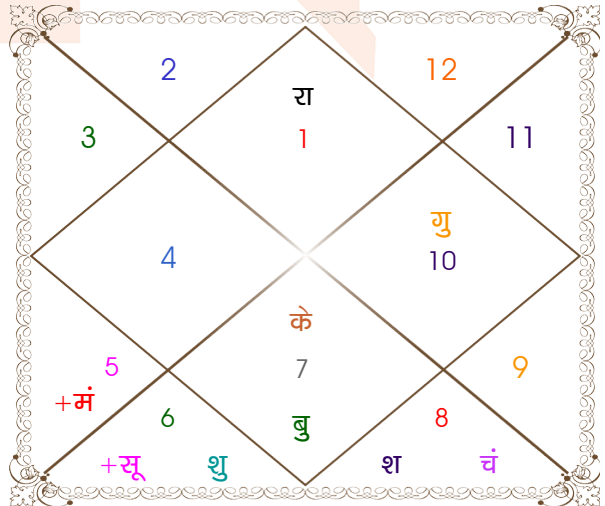
तारा चक्र

जन्म	सम्पत	विपत	क्षेम	प्रत्यारि	साधक	वध	मित्र	अतिमित्र
विशाखा	अनुराधा	ज्येष्ठा	मूल	पूर्वाषाढ़ा	उत्तराषाढ़ा	श्रवण	धनिष्ठा	शतभिषा
पू०भाद्रपद	उ०भाद्रपद	रेवती	अश्विनी	भरणी	कृतिका	रोहिणी	मृगशिरा	आर्द्रा
पुनर्वसु	पुष्य	आश्लेषा	मघा	पू०फाल्गुनी	उ०फाल्गुनी	हस्त	चित्रा	स्वाति

चलित कुंडली



लग्न-चलित



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विंशोत्तरी दशा

भोग्य दशा काल : गुरु 1 वर्ष 5 मास 1 दिन

गुरु 16 वर्ष 16/10/1985 19/03/1987	शनि 19 वर्ष 19/03/1987 19/03/2006	बुध 17 वर्ष 19/03/2006 19/03/2023	केतु 7 वर्ष 19/03/2023 19/03/2030	शुक्र 20 वर्ष 19/03/2030 19/03/2050
00/00/0000	शनि 22/03/1990	बुध 15/08/2008	केतु 15/08/2023	शुक्र 18/07/2033
00/00/0000	बुध 29/11/1992	केतु 12/08/2009	शुक्र 14/10/2024	सूर्य 19/07/2034
00/00/0000	केतु 08/01/1994	शुक्र 12/06/2012	सूर्य 19/02/2025	चंद्र 18/03/2036
00/00/0000	शुक्र 09/03/1997	सूर्य 18/04/2013	चंद्र 20/09/2025	मंगल 18/05/2037
00/00/0000	सूर्य 19/02/1998	चंद्र 17/09/2014	मंगल 16/02/2026	राहु 18/05/2040
00/00/0000	चंद्र 21/09/1999	मंगल 15/09/2015	राहु 07/03/2027	गुरु 17/01/2043
00/00/0000	मंगल 30/10/2000	राहु 03/04/2018	गुरु 11/02/2028	शनि 19/03/2046
16/10/1985	राहु 06/09/2003	गुरु 09/07/2020	शनि 22/03/2029	बुध 17/01/2049
राहु 19/03/1987	गुरु 19/03/2006	शनि 19/03/2023	बुध 19/03/2030	केतु 19/03/2050
सूर्य 6 वर्ष 19/03/2050 18/03/2056	चंद्र 10 वर्ष 18/03/2056 19/03/2066	मंगल 7 वर्ष 19/03/2066 19/03/2073	राहु 18 वर्ष 19/03/2073 19/03/2091	गुरु 16 वर्ष 19/03/2091 17/10/2105
सूर्य 06/07/2050	चंद्र 17/01/2057	मंगल 15/08/2066	राहु 30/11/2075	गुरु 06/05/2093
चंद्र 05/01/2051	मंगल 18/08/2057	राहु 03/09/2067	गुरु 24/04/2078	शनि 18/11/2095
मंगल 13/05/2051	राहु 17/02/2059	गुरु 08/08/2068	शनि 28/02/2081	बुध 23/02/2098
राहु 06/04/2052	गुरु 18/06/2060	शनि 17/09/2069	बुध 18/09/2083	केतु 29/01/2099
गुरु 23/01/2053	शनि 17/01/2062	बुध 14/09/2070	केतु 05/10/2084	शुक्र 30/09/2101
शनि 05/01/2054	बुध 18/06/2063	केतु 11/02/2071	शुक्र 06/10/2087	सूर्य 20/07/2102
बुध 11/11/2054	केतु 17/01/2064	शुक्र 12/04/2072	सूर्य 30/08/2088	चंद्र 19/11/2103
केतु 19/03/2055	शुक्र 17/09/2065	सूर्य 18/08/2072	चंद्र 01/03/2090	मंगल 25/10/2104
शुक्र 18/03/2056	सूर्य 19/03/2066	चंद्र 19/03/2073	मंगल 19/03/2091	राहु 17/10/2105

- ❖ उपरोक्त दशा चंद्रमा के अंशो के आधार पर दी गई है। भयात भभोग के आधार पर दशा का भोग्यकाल गुरु 1 वर्ष 5 मा 4 दि होता है।
- ❖ उपरोक्त तिथियां दशा के समाप्त होने का समय दर्शाती हैं। विंशोत्तरी दशा पूरे 120 वर्ष की बिना आयुनिर्णय के दी गई हैं।

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

केतु - मंगल	केतु - राहु	केतु - गुरु	केतु - शनि	केतु - बुध
20/09/2025	16/02/2026	07/03/2027	11/02/2028	22/03/2029
16/02/2026	07/03/2027	11/02/2028	22/03/2029	19/03/2030
मंगल 29/09/2025	राहु 15/04/2026	गुरु 21/04/2027	शनि 15/04/2028	बुध 12/05/2029
राहु 21/10/2025	गुरु 05/06/2026	शनि 14/06/2027	बुध 11/06/2028	केतु 02/06/2029
गुरु 10/11/2025	शनि 05/08/2026	बुध 02/08/2027	केतु 05/07/2028	शुक्र 01/08/2029
शनि 04/12/2025	बुध 28/09/2026	केतु 22/08/2027	शुक्र 10/09/2028	सूर्य 20/08/2029
बुध 25/12/2025	केतु 21/10/2026	शुक्र 17/10/2027	सूर्य 01/10/2028	चंद्र 19/09/2029
केतु 03/01/2026	शुक्र 23/12/2026	सूर्य 03/11/2027	चंद्र 03/11/2028	मंगल 10/10/2029
शुक्र 28/01/2026	सूर्य 12/01/2027	चंद्र 02/12/2027	मंगल 27/11/2028	राहु 03/12/2029
सूर्य 04/02/2026	चंद्र 13/02/2027	मंगल 22/12/2027	राहु 27/01/2029	गुरु 21/01/2030
चंद्र 16/02/2026	मंगल 07/03/2027	राहु 11/02/2028	गुरु 22/03/2029	शनि 19/03/2030
शुक्र - शुक्र	शुक्र - सूर्य	शुक्र - चंद्र	शुक्र - मंगल	शुक्र - राहु
19/03/2030	18/07/2033	19/07/2034	18/03/2036	18/05/2037
18/07/2033	19/07/2034	18/03/2036	18/05/2037	18/05/2040
शुक्र 08/10/2030	सूर्य 06/08/2033	चंद्र 07/09/2034	मंगल 12/04/2036	राहु 30/10/2037
सूर्य 08/12/2030	चंद्र 05/09/2033	मंगल 13/10/2034	राहु 15/06/2036	गुरु 25/03/2038
चंद्र 19/03/2031	मंगल 26/09/2033	राहु 12/01/2035	गुरु 11/08/2036	शनि 14/09/2038
मंगल 29/05/2031	राहु 20/11/2033	गुरु 03/04/2035	शनि 17/10/2036	बुध 17/02/2039
राहु 28/11/2031	गुरु 08/01/2034	शनि 09/07/2035	बुध 17/12/2036	केतु 22/04/2039
गुरु 08/05/2032	शनि 07/03/2034	बुध 03/10/2035	केतु 11/01/2037	शुक्र 21/10/2039
शनि 17/11/2032	बुध 27/04/2034	केतु 07/11/2035	शुक्र 23/03/2037	सूर्य 15/12/2039
बुध 08/05/2033	केतु 19/05/2034	शुक्र 17/02/2036	सूर्य 13/04/2037	चंद्र 15/03/2040
केतु 18/07/2033	शुक्र 19/07/2034	सूर्य 18/03/2036	चंद्र 18/05/2037	मंगल 18/05/2040
शुक्र - गुरु	शुक्र - शनि	शुक्र - बुध	शुक्र - केतु	सूर्य - सूर्य
18/05/2040	17/01/2043	19/03/2046	17/01/2049	19/03/2050
17/01/2043	19/03/2046	17/01/2049	19/03/2050	06/07/2050
गुरु 25/09/2040	शनि 19/07/2043	बुध 12/08/2046	केतु 11/02/2049	सूर्य 24/03/2050
शनि 26/02/2041	बुध 30/12/2043	केतु 12/10/2046	शुक्र 23/04/2049	चंद्र 02/04/2050
बुध 14/07/2041	केतु 07/03/2044	शुक्र 02/04/2047	सूर्य 14/05/2049	मंगल 09/04/2050
केतु 09/09/2041	शुक्र 15/09/2044	सूर्य 24/05/2047	चंद्र 18/06/2049	राहु 25/04/2050
शुक्र 18/02/2042	सूर्य 12/11/2044	चंद्र 18/08/2047	मंगल 13/07/2049	गुरु 10/05/2050
सूर्य 08/04/2042	चंद्र 17/02/2045	मंगल 18/10/2047	राहु 15/09/2049	शनि 27/05/2050
चंद्र 28/06/2042	मंगल 25/04/2045	राहु 21/03/2048	गुरु 11/11/2049	बुध 12/06/2050
मंगल 24/08/2042	राहु 16/10/2045	गुरु 06/08/2048	शनि 18/01/2050	केतु 18/06/2050
राहु 17/01/2043	गुरु 19/03/2046	शनि 17/01/2049	बुध 19/03/2050	शुक्र 06/07/2050

विंशोत्तरी दशा - प्रत्यन्तर

सूर्य - चंद्र 06/07/2050 05/01/2051	सूर्य - मंगल 05/01/2051 13/05/2051	सूर्य - राहु 13/05/2051 06/04/2052	सूर्य - गुरु 06/04/2052 23/01/2053	सूर्य - शनि 23/01/2053 05/01/2054
चंद्र 22/07/2050 मंगल 01/08/2050 राहु 29/08/2050 गुरु 22/09/2050 शनि 21/10/2050 बुध 16/11/2050 केतु 27/11/2050 शुक्र 27/12/2050 सूर्य 05/01/2051	मंगल 13/01/2051 राहु 01/02/2051 गुरु 18/02/2051 शनि 10/03/2051 बुध 28/03/2051 केतु 05/04/2051 शुक्र 26/04/2051 सूर्य 02/05/2051 चंद्र 13/05/2051	राहु 01/07/2051 गुरु 14/08/2051 शनि 05/10/2051 बुध 21/11/2051 केतु 10/12/2051 शुक्र 03/02/2052 सूर्य 19/02/2052 चंद्र 17/03/2052 मंगल 06/04/2052	गुरु 15/05/2052 शनि 30/06/2052 बुध 10/08/2052 केतु 27/08/2052 शुक्र 15/10/2052 सूर्य 30/10/2052 चंद्र 23/11/2052 मंगल 10/12/2052 राहु 23/01/2053	शनि 19/03/2053 बुध 07/05/2053 केतु 27/05/2053 शुक्र 24/07/2053 सूर्य 10/08/2053 चंद्र 08/09/2053 मंगल 29/09/2053 राहु 20/11/2053 गुरु 05/01/2054
सूर्य - बुध 05/01/2054 11/11/2054	सूर्य - केतु 11/11/2054 19/03/2055	सूर्य - शुक्र 19/03/2055 18/03/2056	चंद्र - चंद्र 18/03/2056 17/01/2057	चंद्र - मंगल 17/01/2057 18/08/2057
बुध 18/02/2054 केतु 08/03/2054 शुक्र 29/04/2054 सूर्य 14/05/2054 चंद्र 09/06/2054 मंगल 27/06/2054 राहु 13/08/2054 गुरु 23/09/2054 शनि 11/11/2054	केतु 19/11/2054 शुक्र 10/12/2054 सूर्य 16/12/2054 चंद्र 27/12/2054 मंगल 04/01/2055 राहु 23/01/2055 गुरु 09/02/2055 शनि 01/03/2055 बुध 19/03/2055	शुक्र 19/05/2055 सूर्य 06/06/2055 चंद्र 07/07/2055 मंगल 28/07/2055 राहु 21/09/2055 गुरु 08/11/2055 शनि 05/01/2056 बुध 26/02/2056 केतु 18/03/2056	चंद्र 13/04/2056 मंगल 30/04/2056 राहु 15/06/2056 गुरु 26/07/2056 शनि 12/09/2056 बुध 25/10/2056 केतु 12/11/2056 शुक्र 02/01/2057 सूर्य 17/01/2057	मंगल 29/01/2057 राहु 02/03/2057 गुरु 31/03/2057 शनि 03/05/2057 बुध 02/06/2057 केतु 15/06/2057 शुक्र 20/07/2057 सूर्य 31/07/2057 चंद्र 18/08/2057
चंद्र - राहु 18/08/2057 17/02/2059	चंद्र - गुरु 17/02/2059 18/06/2060	चंद्र - शनि 18/06/2060 17/01/2062	चंद्र - बुध 17/01/2062 18/06/2063	चंद्र - केतु 18/06/2063 17/01/2064
राहु 08/11/2057 गुरु 20/01/2058 शनि 17/04/2058 बुध 03/07/2058 केतु 04/08/2058 शुक्र 04/11/2058 सूर्य 01/12/2058 चंद्र 16/01/2059 मंगल 17/02/2059	गुरु 23/04/2059 शनि 09/07/2059 बुध 16/09/2059 केतु 14/10/2059 शुक्र 03/01/2060 सूर्य 28/01/2060 चंद्र 08/03/2060 मंगल 06/04/2060 राहु 18/06/2060	शनि 17/09/2060 बुध 08/12/2060 केतु 11/01/2061 शुक्र 17/04/2061 सूर्य 16/05/2061 चंद्र 03/07/2061 मंगल 06/08/2061 राहु 01/11/2061 गुरु 17/01/2062	बुध 31/03/2062 केतु 30/04/2062 शुक्र 26/07/2062 सूर्य 21/08/2062 चंद्र 03/10/2062 मंगल 02/11/2062 राहु 19/01/2063 गुरु 29/03/2063 शनि 18/06/2063	केतु 01/07/2063 शुक्र 05/08/2063 सूर्य 16/08/2063 चंद्र 03/09/2063 मंगल 15/09/2063 राहु 17/10/2063 गुरु 15/11/2063 शनि 18/12/2063 बुध 17/01/2064

शुभाशुभ ज्ञानम्

शुभाशुभज्ञान आपको अपने मित्र एवं शत्रु वर्ग का बोध कराता है। मूलांक, भाग्यांक एवं मित्रांक से मित्रता एवं साझेदारी करने से लाभ तथा सहयोग की प्राप्ति होती है। साथ ही शुभ दिन एवं वर्ष उन्नति कारक तथा शुभ ग्रहों की दशाएं लाभदायक होती हैं। इसी प्रकार मित्रलग्न लाभदायक एवं मित्र राशि से घनिष्ठता होती है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न, द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान का दैनिक जीवन में प्रयोग शुभफलदायक सिद्ध हो सकता है।

मूलांक	7
भाग्यांक	4
मित्र अंक	2, 3, 6, 7, 4
शत्रु अंक	5, 8
शुभ वर्ष	25,34,43,52,61
शुभ दिन	गुरु, रवि, मंगल
शुभ ग्रह	गुरु, सूर्य, मंगल
मित्र राशि	कर्क, सिंह
मित्र लग्न	कर्क, धनु, कुम्भ
अनुकूल देवता	शिव
शुभ रत्न	मूंगा
शुभ उपरत्न	संगमूंगी
भाग्य रत्न	पुखराज
शुभ धातु	ताम्र
शुभ रंग	रक्त
शुभ दिशा	दक्षिण
शुभ समय	सूर्योदय के बाद
दान पदार्थ	केसर, कस्तूरी, रक्तचन्दन
दान अन्न	मल्का
दान द्रव्य	घी



FUTUREPOINT
Astro Solutions

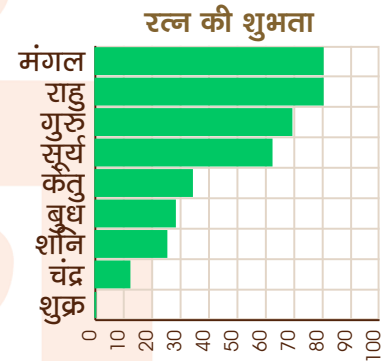


रत्न चयन

रत्न जीवन में शुभत्व की वृद्धि के लिए धारण किए जाते हैं। वैज्ञानिक रूप से, रत्न अपने ग्रह की राशियों को पूर्णमात्रा में मानव शरीर में प्रवाहित कर ग्रह प्रभाव की वृद्धि करते हैं। यही कारण है कि रत्न केवल शुभ ग्रहों का ही धारण किया जाता है। ग्रह शुभ माना जाता है यदि यह लग्न, त्रिकोण या केन्द्र में स्थापित हो या स्वामी हो। यह अशुभ होता है यदि यह त्रिक भाव से संबंधित हो। मित्रों की युति या दृष्टि भी इसकी शुभता बढ़ाती है। बाधक भाव का स्वामित्व शुभता कम कर देता है। चर लग्नों में एकादश, स्थिर में नवम व द्विस्वभाव में सप्तम भाव की बाधक संज्ञा है। उपरोक्त तथ्य रत्न चयन हेतु ग्रह की शुभता दर्शाते हैं।

नीचे जन्मकुण्डली में ग्रहों की शुभता को सारणी व ग्राफ में दर्शित किया गया है। साथ ही कौन सा ग्रह किस क्षेत्र में कार्य सिद्ध कर सकता है दिया गया है। विभिन्न दशाओं में विभिन्न रत्नों की शुभता भी नीचे तालिका में दी गई है। जिस ग्रह को 75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उसके रत्न हमें सर्वदा बिना दशा विचार के धारण करने चाहिए। जिन्हें 50-75 प्रतिशत शुभता प्राप्त है उन्हें कार्य क्षेत्र अनुसार व अनुकूल दशा में धारण करना चाहिए। जो रत्न केवल 25-50 प्रतिशत शुभता लिए हैं उनके रत्न केवल उनकी या उनके मित्रों की दशा में धारण करने चाहिए। अन्ततः जिन्हें 25 प्रतिशत से भी कम शुभता प्राप्त है वे ग्रह अपने लिए अशुभ ही समझें और उनके रत्नों को पहनने से बचना चाहिए।

रत्न	ग्रह	शुभता	क्षेत्र
मूंगा	मंगल	80%	सन्तति सुख, स्वास्थ्य, दुर्घटना से बचाव
गोमेद	राहु	80%	स्वास्थ्य, सन्तति सुख
पुखराज	गुरु	69%	व्यावसायिक उन्नति, भाग्योदय, कम खर्च
माणिक्य	सूर्य	62%	शत्रु व रोग मुक्ति, सन्तति सुख
लहसुनिया	केतु	34%	दाम्पत्य कष्ट, शत्रु व रोग
पन्ना	बुध	28%	दाम्पत्य कष्ट, पराक्रम हानि, शत्रु व रोग
नीलम	शनि	25%	दुर्घटना, व्यावसायिक हानि, हानि
मोती	चंद्र	12%	दुर्घटना, ग्रह कलेश
हीरा	शुक्र	0%	शत्रु व रोग, धन हानि, दाम्पत्य कष्ट



दशानुसार रत्न विचार

दशा	समाप्ति	माणिक्य	मोती	मूंगा	पन्ना	पुखराज	हीरा	नीलम	गोमेद	लहसुनिया
गुरु	19/03/1987	69%	25%	86%	3%	81%	0%	25%	80%	34%
शनि	19/03/2006	50%	0%	67%	41%	69%	6%	50%	86%	9%
बुध	19/03/2023	69%	0%	80%	52%	69%	6%	25%	80%	34%
केतु	19/03/2030	50%	0%	86%	28%	69%	6%	0%	67%	55%
शुक्र	19/03/2050	50%	0%	80%	41%	69%	19%	38%	86%	47%
सूर्य	18/03/2056	75%	25%	86%	28%	75%	0%	0%	67%	9%
चंद्र	19/03/2066	69%	38%	80%	41%	69%	0%	25%	67%	9%
मंगल	19/03/2073	69%	25%	92%	3%	75%	0%	25%	67%	47%
राहु	19/03/2091	50%	0%	67%	28%	69%	6%	38%	92%	9%



FUTUREPOINT
Astro Solutions



विस्तृत रत्न विचार

औषधि मणि मंत्राणां, ग्रह-नक्षत्र तारिका ।
भाग्यकाले भवेत्सिद्धिः अभाग्यं निष्फलं भवेत् ।।

औषधि, मणि एवं मंत्र ग्रह नक्षत्र जनित रोगों को दूर करते हैं। यदि समय सही है तो इनसे उपयुक्त फल प्राप्त होते हैं। विपरीत समय में ये सभी निष्फल हो जाते हैं।

रत्न शरीर की शोभा बढ़ाने के साथ साथ अपनी चमत्कारिक शक्ति द्वारा ग्रहों के विपरीत प्रभावों को कम करके ग्रह बल को बढ़ाते हैं। रत्न हमारे शरीर में ग्रहों से आ रही किरणों का प्रवाह बढ़ाते हैं। अतः जो ग्रह आपकी कुण्डली में शुभ हो लेकिन निर्बल हो उनका रत्न पहनने से ग्रह की निर्बलता दूर होती है। यही कारण है कि अशुभ ग्रहों के रत्न सर्वदा त्याज्य है।

रत्न जितना साफ व सही कटाव का होगा उतना ही अधिक रश्मियों को एकत्रित करने में सक्षम होता है। अतः अच्छी गुणवत्ता के रत्न ही पूर्णतः फल देने में समर्थ होते हैं। रत्न का वजन व शरीर का वजन ग्रह की निर्बलता के अनुपात में होना चाहिए। यदि ग्रह बहुत कमजोर है तो अधिक वजन का रत्न पहनना चाहिए। हीरे को छोड़कर रत्न शरीर से छुना अति आवश्यक हैं। अंगूली में व विशेष धातु में पहनने से रत्न का प्रभाव अधिकतम होता है।

यदि किसी कारणवश रत्न उतारना है तो रत्न के वार के दिन ही उतारकर श्रद्धापूर्वक गंगाजल में धोकर सुरक्षित स्थान पर रखना चाहिए। यदि रत्न खो जाए या चोरी हो जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह दोष खत्म हो गया है। यदि रत्न का रंग फिका पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह का अशुभ प्रभाव शांत हुआ समझना चाहिए। यदि रत्न में दरार पड़ जाए तो यह समझना चाहिए कि ग्रह प्रभावशाली है तब ग्रह की शांति कराए तथा दूसरा रत्न बनवाकर पुनः पहनें।

कुंडली में जो ग्रह अशुभ हो उनके लिए रुद्राक्ष धारण, मंत्र, दान, जल, विसर्जन एवं व्रत आदि उपायों से ग्रहों की अशुभता को दूर किया जा सकता है। यदि आप किसी कारणवश रत्न धारण करने में असमर्थ हैं तो आप इन रत्नों के रुद्राक्ष या उपरत्न धारण कर ग्रह शुभता प्राप्त कर सकते हैं अन्यथा मंत्र जाप। दान या व्रत आदि से भी ग्रहों का बलाबल बढ़ा सकते हैं।

किसी भी कुंडली के लिए लग्नेश जीवन रत्न होता है और इसके धारण करने से स्वास्थ्य लाभ व व्यक्तित्व विकास व मान-सम्मान प्राप्त होता है। नवमेश का रत्न भाग्य रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से भाग्य की बढ़ोतरी होते हैं। साथ ही यह रत्न मान-प्रतिष्ठा भी बढ़ाता है। योगकारक या पंचमेश ग्रह का रत्न। कारक रत्न कहलाता है। इसके धारण करने से कार्य में प्रगति। धन लाभ व चौमुखी विकास प्राप्त होता है। आपको कौन सा रत्न पहनना चाहिए व कौन सा नहीं इसके लाभ/हानि की जानकारी विस्तृत रूप में नीचे दी जा रही है।

शुभरत्न धातु एवं रंग धारण करने से शारीरिक एवं मानसिक स्वस्थता बनी रहती है तथा भाग्य रत्न धारण करने से सौभाग्य में वृद्धि होती है। शुभ समय में कोई भी कार्य प्रारम्भ करने से उसमें इच्छित सफलता की प्राप्ति होती है। साथ ही इष्टदेव का ध्यान एवं जप से मानसिक शान्ति तथा सफलता मिलती है। शुभ पदार्थ अन्न। द्रव्य आदि का दान या व्यापार शुभ दिशा में करने से वांछित लाभ प्राप्त होता है। इस प्रकार शुभाशुभज्ञान सिद्ध हो सकता है।

आपकी कुंडली और रत्न

आपके लिए मूंगा व गोमेद रत्न धारण करना अति शुभ फलदायक है। इन्हें आप सर्वदा धारण करेंगे तो आपके जीवन का चहुंमुखी विकास होगा। धन लाभ व व्यावसायिक उन्नति होगी।

मूंगा आपका जीवन रत्न है इसको धारण करने से आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। मान-प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। कार्य क्षेत्र में प्रगति होगी।

गोमेद आपका कारक रत्न है। कारक रत्न के धारण करने से व्यावसायिक उन्नति प्राप्त होती है। धन लाभ होता है। सुख सम्पत्ति की प्राप्ति होती है। जीवन में नयी ऊर्जा का प्रवाह होता है।

अतः उपरोक्त रत्न आप अवश्य धारण करें। सभी रत्न जीवन पर्यन्त धारण करने से ग्रहों की विशेष शुभता प्राप्त होगी और जीवन सुखमय होकर गतिमान होगा। उपरोक्त रत्न आप बिना किसी दशा या गोचर विचार के धारण कर सकते हैं क्योंकि सभी रत्न अति शुभफलदायी हैं।

आपके लिए पुखराज एवं माणिक्य रत्न शुभ हैं लेकिन ये रत्न दशानुसार शुभाशुभ फल देने में सक्षम है। अतः इन्हें आप स्वदशा या मित्र दशा में धारण करेंगे तो ये शुभ फल देंगे। शत्रु दशा में इनको नहीं पहनना ही बेहतर होगा। उस समय इन ग्रहों के उपाय आप रुद्राक्ष पहन कर या दान, मंत्र जाप आदि से करना श्रेष्ठ होगा।

लहसुनिया, पन्ना व नीलम रत्न आपके लिए नेष्ट हैं। अतः इन्हें न पहनना ही बेहतर है। यदि आप इन रत्नों को धारण करते हैं तो इनकी अनुकूलता का परिक्षण अवश्य कर लें। अनुकूलता होने पर ही इन्हें धारण करें, अन्यथा शीघ्र अति शीघ्र उतार दें। इन रत्नों के धारण करने से आपको मानसिक परेशानी, स्वास्थ्य में कमी या धन हानि हो सकती है।

मोती व हीरा रत्न पहनना आपके लिए कष्टकारी सिद्ध हो सकता है। क्योंकि इनके स्वामी ग्रह आपकी कुंडली में बिल्कुल भी शुभ फलदायक नहीं हैं। अतः इन रत्नों का आप सर्वदा त्याग ही करें। इनके पहनने से आपको सामाजिक, आर्थिक और स्वास्थ्य के पक्ष से विपरीत फल प्राप्त हो सकते हैं। मान-सम्मान में कमी, धन-धान्य का अभाव तथा उन्नति बाधित हो सकती है। इन रत्नों का आप जीवन पर्यन्त ही त्याग करें क्योंकि ये रत्न किसी भी दशा या गोचर में शुभफलदायी नहीं हो सकते।

विभिन्न रत्न आपके लिए किस प्रकार से फलदायी रहेंगे एवं उनकी धारण विधि का विस्तृत विवरण निम्न प्रकार से है :-

मूंगा

आपकी कुंडली में मंगल पंचम भाव में स्थित है। आपको मंगल रत्न मूंगा धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न आपको चंचलता देने के साथ-साथ आपको बुद्धिमता देगा। यह रत्न आपको निर्णय लेने की योग्यता और विवेक क्षमता देगा। मूंगा रत्न के शुभ प्रभाव से आपकी बुद्धि सहज होगी। आपको तकनीकी विषयों में शैक्षिक योग्यता प्राप्त करने की ओर अग्रसर होंगे। मंगल रत्न मूंगे की शुभता से आप शल्य चिकित्सा के क्षेत्र में शिक्षा ग्रहण कर सफलता पा सकते हैं। मूंगा रत्न आपको उत्साही और ऊर्जा शक्ति से युक्त बनाये रखेगा।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में मंगल लग्नेश और अष्टमेश के रूप में शुभ फल देने वाला ग्रह है। यद्यपि अष्टम भाव का स्वामी शुभ नहीं होता, परन्तु लग्नेश भी होने के कारण मंगल अष्टम दोष से मुक्त है। मंगल रत्न मूंगा शुभ ग्रह होकर आपके स्वास्थ्य, शक्ति, ऊर्जा, आरोग्यता, स्वाभिमान, अधिकार, प्रभुत्व और नेतृत्व शक्ति का विकास कर सकता है। मंगल अष्टमेश भी है इसलिए मंगल रत्न मूंगा धारण करने से आपके जीवन की बाधाओं में भी कमी आ सकती है। आप मूंगा धारण कर अपने स्वास्थ्य सुख को बढ़ा सकते हैं। मूंगा धारण करने से आपके आत्मविश्वास, दृढ़निश्चयता और साहस भाव में वृद्धि हो सकती है। लग्नेश का रत्न होने के कारण मूंगा आपके लिए जीवन रत्न भी है।

मूंगा रत्न अनामिका अंगूली में, चांदी धातु में जड़वाकर मंगलवार को प्रातः काल में स्नानादि क्रियाओं से शुद्ध होकर इस रत्न को पंचामृत से शुद्ध कर अपने ईष्ट देव का पूजन करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। मूंगा रत्न धारण करने के पश्चात मंगल मंत्र ॐ अं अंगारकाय नमः का १ माला जाप करना चाहिए। इसके पश्चात मंगल वस्तुएं जैसे - गेहूं, गुड़, तांबा, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। मूंगा रत्न कम से कम ६ रत्ती से लेकर अधिकतम ८ रत्ती तक का धारण करना शुभ रहता है।

मूंगा रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ हीरा, गोमेद एवं नीलम रत्न को धारण करना अनुकूल नहीं माना गया है। यदि आप इस रत्न को अंगूठी रूप में धारण न कर पाएं तो आप इसे लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। यह रत्न रजत धातु के अलावा स्वर्ण धातु में भी धारण किया जा सकता है। मूंगा रत्न धारण न कर पाने की स्थिति में आप इस रत्न के उपरत्न लाल हकीक एवं ३ मुखी रुद्राक्ष भी आप धारण कर सकते हैं।

गोमेद

आपकी कुंडली में राहु लग्न भाव में स्थित है। अतः आपको राहु रत्न गोमेद धारण करना चाहिए। राहु रत्न गोमेद आपको मनस्वी एवं साहसी बनाएगा तथा रत्न आपके चातुर्य योग्यता को बढ़ायेगा। रत्न के शुभ प्रभाव से आपको विवाद में विजय, अध्ययनशीलता एवं कार्यकुशलता कौशल की प्राप्ति होगी। लग्न भाव से राहु सप्तम को देख रहे हैं जिसके कारण गोमेद रत्न धारण करने से आपका वैवाहिक जीवन सुखमय हो सकता है। इस रत्न को धारण करने से आप भ्रम मुक्त जीवन का आनंद लेंगे।

राहु मेष राशि में स्थित है व इसका स्वामी मंगल पंचम भाव में स्थित है। अतः गोमेद रत्न धारण करने से आपको शिक्षा क्षेत्र में विशेष सम्मान, पद और सफलता प्राप्त होगी। रत्न शुभता आपको अधिकार शक्ति प्रदान करेगी। आप शिक्षा क्षेत्र या मनोरंजन क्षेत्र में अपनी विशेष योग्यता दिखा पाएंगे। इस रत्न को धारण करने से आप धन-संपत्ति का संचय करने में सफल होंगे। अध्ययन कार्यों में आपका आत्मविश्वास बढ़ा-चढ़ा रहेगा। एवं यह रत्न आपके संतान सुख को बढ़ाएगा। आपको कम परिश्रम करने पर भी अधिक लाभ देगा। विद्याध्ययन में आपकी रुचि जागृत होगी तथा धार्मिक क्रिया-कलापों में आपको सुख का अनुभव होगा।

गोमेद रत्न अष्टधातु से निर्मित अंगूठी को शनिवार के दिन सूर्यास्त काल में सभी प्रकार से स्वयं शुद्ध होकर रत्न जड़ित अंगूठी को दूध, जल, शक्कर, दही और शहद से स्नान करायें। इसके बाद रत्न का धूप, दीप और फूल से पूजन कर मध्यमा अंगूठी में धारण करें। रत्न धारण के पश्चात राहु मंत्र ॐ रां राहवे नमः का १०८ बार जाप करें और फिर इस ग्रह की वस्तुएं जैसे- तिल, तेल, कंबल, नीले वस्त्र आदि का दान करें। गोमेद रत्न का वजन कम से कम ४ रत्ती और अधिकतम ८-१० रत्ती होना चाहिए।

गोमेद रत्न धारण करने के बाद इस रत्न के साथ माणिक्य, मोती एवं मूंगा रत्न धारण करने से बचना चाहिए। अंगूठी रूप में इस रत्न को धारण न कर पाने की स्थिति में इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रेसलेट या दूसरे हाथ में भी पहना जा सकता है। विशेष परिस्थितियों में रत्न के स्थान पर इसके उपरत्न गोमेद या ८ मुखी रुद्राक्ष को भी धारण करना श्रेष्ठकर रहता है।

पुखराज

आपकी कुंडली में गुरु दशम भाव में स्थित है। आपके लिए गुरु रत्न पुखराज धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करना आपके लिए शुभदायक रहेगा। यह रत्न आपको चरित्रवान और स्वतंत्र विचारक बनाएगा। इसके अतिरिक्त यह रत्न आपको विवेकी, न्यायी और सत्यवादी भी बनाएगा। पुखराज रत्न की शुभता आपको शास्त्रों का विधिवत ज्ञान होगा। पुखराज रत्न आपको उत्तम वाहनों का सुख देगा। भूमि सुख और भूमि के माध्यम से खूब लाभ देगा। रत्न प्रभाव से आप अपने माता-पिता का अत्यधिक आदर करने वाले बनेंगे। आप खूब धन कमाकर, ऐश्वर्यवान, सुखी और समृद्ध बनेंगे। आप सुंदर वस्त्र और आभूषणों से युक्त होंगे।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में गुरु भाग्येश एवं व्ययेश है। भाग्येश होने के कारण बृहस्पति ग्रह आपके लिए शुभ ग्रह है। भाग्येश गुरु का रत्न पुखराज धारण कर आप अपने भाग्य की बाधाओं को दूर कर सकते हैं। प्रयास करने पर भी यदि आपके कार्य पूर्ण नहीं हो रहे हैं तो गुरु रत्न पुखराज धारण करने से भाग्योदय होकर कार्य में सफलता प्राप्त हो सकती है। यह रत्न धर्म, ज्ञान एवं विवेक भाव की वृद्धि के लिए अनुकूल रत्न है। पुखराज द्वादशेश का रत्न होने के कारण विदेश यात्रा और विदेश गमन, शयन सुख को बढ़ाया सकता है। अतः आप पुखराज रत्न धारण कर सकते हैं।

इस रत्न को स्वर्ण धातु में जड़वाकर, गुरुवार के दिन प्रातःकाल में सभी प्रकार से शुद्ध होने के बाद रत्न को धूप, दीप दिखाकर तर्जनी अंगूठी में धारण करना चाहिए। पुखराज रत्न धारण करने के बाद ॐ वृं बृहस्पतये नमः का एक माला जाप ५ मुखी रुद्राक्ष माला पर

करना चाहिए। जप पूर्ण करने के बाद किसी जरूरतमंद को गुरु ग्रह से संबंधित पदार्थों का दान अपने सामर्थ्यशक्ति के अनुसार करना चाहिए। गुरु ग्रह की वस्तुएं इस प्रकार हैं- चने की दाल, हल्दी, पीला वस्त्र। यह रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती का धारण किया जा सकता है।

पुखराज रत्न के साथ हीरा और गोमेद रत्न धारण करना अनुकूल फलदायक नहीं रहता है। विशेष आवश्यकता होने पर आप इस रत्न को लॉकेट/ माला/ ब्रसलेट या दूसरे हाथ में भी धारण कर सकते हैं। किसी कारणवश यदि पुखराज रत्न आप धारण न कर पाएं तो आप इसके उपरत्न सुनहला, पीला हकीक, पीताम्बरी रत्न एवं ५ मुखी रुद्राक्ष धारण करें।

माणिक्य

आपकी कुंडली में सूर्य छठे भाव में स्थित है। आपको सूर्य रत्न माणिक्य धारण करना चाहिए। माणिक्य रत्न आपको पराक्रमी बनाएगा और आप अपने शत्रुओं को परास्त करने में समर्थ होंगे। रत्न की शुभता से आपकी कठोरता में कमी होगी। आप भाग्यशाली बनेंगे। रत्न शुभता से आपकी न्यायप्रियता बढ़ेगी। आपको सरकारी नौकरी में उच्चाधिकारियों की ओर से यथासंभव सहयोग प्राप्त होगा। ननिहाल पक्ष से संबंध मजबूत होंगे। सूर्य रत्न माणिक्य आपको समाज में सम्मान दिलायेंगे। रत्न शुभता से आप तेजस्वी बनेंगे।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में सूर्य पंचम भाव का स्वामी है। सूर्य लग्नेश मंगल का मित्र है। सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सूर्य को प्रबल कर सकते हैं। माणिक्य रत्न धारण करने से आपके स्वास्थ्य, आरोग्यता, यश-मान, ज्ञान, योग्यता एवं बुद्धि का विकास हो सकता है। सूर्य पंचमेश है और पंचमेश का रत्न होने के कारण माणिक्य आपके संतान सुख में भी वृद्धि करने में भी सक्षम है। इसके अलावा सूर्य रत्न माणिक्य धारण कर आप सरकार द्वारा लाभ प्राप्त कर सकते हैं।

यह रत्न अनामिका अंगूली, स्वर्ण धातु में जड़वाकर रविवार को प्रातः काल में स्नानादि से निवृत्त होकर धारण करना चाहिए। पंचामृत से रत्न को शुद्ध करने के पश्चात धूप, दीप दिखाकर धारण करना चाहिए। धारण करने के पश्चात सूर्य मंत्र ॐ घृणि सूर्याय नमः का कम से कम १ माला जाप करना चाहिए। तदपश्चात सूर्य वस्तुएं जैसे- गेहूं, गुड़, चंदन, लाल वस्त्र आदि का दान करना चाहिए। माणिक्य रत्न कम से कम ४ रत्ती से लेकर ८ रत्ती तक का धारण करना लाभकारी रहता है।

माणिक्य रत्न के साथ नीलम या गोमेद रत्न को धारण करने से बचना चाहिए। अति आवश्यकता में इन्हें आप लॉकेट रूप में या दूसरे हाथ में धारण कर सकते हैं। आवश्यकता में यह रत्न चांदी धातु में भी धारण किया जा सकता है। यदि आप माणिक्य रत्न पहनने में किसी प्रकार से असमर्थ हैं तो आप इसके स्थान पर लाल तुरमली, गुलाबी हकीक, गारनेट एवं एक मुखी रुद्राक्ष भी धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया

आपकी कुंडली में केतु सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपका व्यापारिक

क्षेत्र में धन अधिक खर्च हो सकता है। कई बार आपका धन नष्ट हो सकता है। यह रत्न आपको आर्थिक चिंताएं दे सकता है। लहसुनिया रत्न प्रभाव से आपके द्वारा पिता का संचित धन भी नष्ट हो सकता है। यह रत्न वैवाहिक सुख कम कर सकता है। मित्रों से आपको कष्ट दिला सकता है। रत्न धारण करने के बाद यात्राएं कष्टकारी या असफल हो सकती हैं। केतु रत्न लहसुनिया धारण करने पर आपको शत्रुओं का भय हो सकता है। मित्रों से कष्ट मिल सकते हैं। कुसंगति के मित्र मिल सकते हैं। साथ ही यह रत्न वैवाहिक सुख में भी कमी कर सकता है।

केतु तुला राशि में स्थित है व इसका स्वामी शुक्र छठे भाव में स्थित है। अतः लहसुनिया रत्न आपको विशेष समय पर बौद्धिक योग्यता का सहयोग प्राप्त नहीं होने देगा। बुद्धि बल की कमी आपको शत्रु पक्ष से पराजय दे सकती है। रत्न प्रभाव से आप रोग, ऋण और शत्रुओं से पीड़ित होंगे। इसके कारण विशेष कार्य करने के अवसर अन्य किसी को प्राप्त हो सकते हैं। बड़े कार्यों में योग्यता दिखाने के अवसर आपको नहीं मिल पाएंगे। आपको कठिन से कठिन परिस्थितियों का सामना करना पड़ सकता है। यह रत्न आपके रोगों में वृद्धि करेगा। कोर्ट कचहरी के मामलों में धन हानि होगी। इस रत्न को पहनने पर आपको विभिन्न षड्यंत्रों से निपटना पड़ेगा।

पन्ना

आपकी कुंडली में बुध सप्तम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः बुध रत्न पन्ना पहनने पर आप व्यर्थ के वाद-विवाद या लड़ाई झगड़ों में पड़ सकते हैं। यह रत्न व्यावसायिक साझेदार पर आपका विश्वास कम कर सकता है। आपके व्यवहार में शिष्टता का अभाव आ सकता है। पन्ना रत्न प्रभाव से आप अत्यधिक व्यवहारिक हो सकते हैं। जिसके कारण आपमें संवेदना, दया और सहानुभूति जैसे गुणों की कमी हो सकती है। लेखन, क्रय-विक्रय और व्यापारिक कुशलता प्राप्ति के लिए रत्न की अनुकूलता नहीं बनी हुई है। बुध रत्न पन्ना से आपके जीवन साथी का स्वभाव अव्यवहारिक हो सकता है। यह रत्न आपको आर्थिक पक्ष से भी कमजोर कर रहा है।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में बुध तीसरे एवं षष्ठ भाव का स्वामी है। पराक्रमेश एवं ऋणेश बुध अपने शुभ फल नहीं दे पाएंगे। अतः बुध रत्न पन्ना धारण करने पर आप रोगग्रस्त हो सकते हैं। आपके परिश्रम भाव में कमी हो सकती है। पन्ना रत्न धारण करने पर बौद्धिक योग्यता, शिक्षा का सुख प्राप्त करने में कष्ट हो सकता है। यह रत्न आपके भाई-बंधुओं से प्राप्त होने वाले सुख-सहयोग को भी बाधित कर सकता है। शत्रुओं की अधिकता आपके जीवन की प्रगति को मन्द कर सकती है। पन्ना रत्न आपको सेवकों, सहोदरों आलोचनात्मक लेख लेखन का स्वभाव दे सकता है। इस रत्न को धारण करने पर आपके द्वारा बुद्धि युक्त विषयों में त्रुटि हो सकती है।

नीलम

आपकी कुंडली में शनि अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शनि रत्न नीलम धारण करने पर आप मानसिक रूप से कुछ हद तक असंतुष्ट हो सकते हैं। रत्न धारण से आपमें क्रोध की अधिकता और उत्साहहीनता

आपमें देखने को मिलेगी। आप दूसरे के दोषों को शीघ्रता से सामने लायेंगे। नीलम रत्न से आपकी रुचि गूढ़ शास्त्रों में हो सकती है। यह रत्न आपको आलसी बना सकता है। इस रत्न का प्रभाव आपको ससुराल पक्ष के कारण हानि करा सकता है। यह रत्न आपके भाग्य में बाधक बन सकता है। नौकरी के क्षेत्र में बाधाएं और तनाव दे सकता है। इस रत्न के प्रभाव से आपका शिक्षा क्षेत्र बाधित हो सकता है।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में शनि कर्मेश एवं आयेश है। शनि आपको शुभ फल देने की स्थिति में नहीं है। अतः इस ग्रह का रत्न धारण करने पर आपकी मान, प्रतिष्ठा, कर्म, पिता, प्रभुता एवं अधिकारों का हनन हो सकता है। यह रत्न आपको व्यापार, हवन, अनुष्ठान, ऐश्वर्य भोग, कीर्तिलाभ, विदेश यात्रा, संपत्ति आदि में कष्ट दे सकता है। नीलम रत्न धारण से आपमें लोभ, स्वार्थ, गुलामी, संतान हीनता, रिश्वतखोरी एवं बेईमानी का भाव जन्म ले सकता है। चाचा, ताऊ, बुआ, बड़े भाईयों आदि विषयों के लिए शनि रत्न की अनुकूलता आपके साथ नहीं बनी हुई है। आपके लिए यह रत्न बाधक भावेश का रत्न भी होने के कारण आपकी उन्नति में बाधक का कार्य भी करेगा।

मोती

आपकी कुंडली में चंद्र अष्टम भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती पहनने पर जल संबंधित रोगों का भय आपको हो सकता है। आपमें ईर्ष्या भाव आ सकता है। मातृ सुख बाधित हो सकता है। मोती रत्न प्रभाव से आपको फेफड़ों संबंधित परेशानियां हो सकती हैं। यह रत्न आपको मनोविकार, चिन्ता नजला जुकाम व खांसी भी दे सकता है। मोती रत्न प्रभाव से आपकी माता के स्वास्थ्य में कमी हो सकती है। ससुराल पक्ष से स्नेह प्रभावित हो सकता है। माता के साथ आपके संबंध अपेक्षाकृत बहुत अनुकूल नहीं रहेंगे। मोती रत्न धारण करने पर आपको किसी बंधन के कारण दुःख का सामना करना पड़ सकता है। विषय वासना के प्रति आपकी रुचि अधिक हो सकती है।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में चंद्र चतुर्थ भाव का स्वामी है। चंद्र अन्य ग्रह योगों के फलस्वरूप अपनी पूर्ण शुभता देने में असमर्थ है। अतः चंद्र रत्न मोती धारण करने पर आपको नकद (रोकड़) धन की कमी हो सकती है। स्वास्थ्य सुख के प्रति आप अत्यधिक सचेत रहेंगे। छाती में कफ संबंधी रोग आपको शारीरिक स्वस्थता दे सकता है। बहन, माता एवं जमीन जायदाद के लिए रत्न की अनुकूलता नहीं बन रही है। चंद्र रत्न मोती आपके सुखों में अनियमितता दे सकता है। नजला जुकाम और पेट के ऊपरी भाग में आपको दर्द दे सकता है। माध्यमिक स्तर की शिक्षा प्राप्ति में मोती रत्न धारण आपकी सफलता को सीमित कर सकता है।

हीरा

आपकी कुंडली में शुक्र षष्ठ भाव में स्थित है। यह ग्रह आपकी कुंडली में अपने सभी शुभ फल देने में असमर्थ है। अतः शुक्र रत्न हीरा आपके वैवाहिक जीवन की समस्याओं को कोर्ट कचहरी में लेकर आ सकता है। साहस की कमी के कारण आप जीवन के अनेक क्षेत्रों में सफल नहीं हो पायेंगे। दांपत्य जीवन की परेशानियां बढ़ सकती हैं। गुरुजनों से भी आपका

विरोध रह सकता है। कुसंगति के मित्र आपकी जीवनशैली में बदलाव कर सकते हैं। आहार विहार अनियमित और अमर्यादित हो सकता है। रत्न प्रभाव से आपके खर्चे आमदनी से अधिक हो सकते हैं। अनुचित विषयों पर आपके व्यय हो सकते हैं। यह रत्न धारण करने के बाद आपको शत्रु पक्ष से सावधान रहना होगा। स्वतंत्र व्यवसाय से प्राप्तियां कम बन रही हैं।

आपकी मेष लग्न की कुंडली में शुक्र द्वितीयेश एवं सप्तम भाव के स्वामी होकर परम मारकेश हो जाते हैं। अतः इस ग्रह का हीरा रत्न धारण करने से आपको धन हानि, पारिवारिक मतभेद एवं वैवाहिक जीवन में कष्टों का सामना करना पड़ सकता है। हीरा रत्न के प्रभाव से आप भ्रमणकारी, व्यसनी और चंचल स्वभाव के हो सकते हैं। रत्न की अनुकूलता कम होने के कारण इस रत्न को पहनने के बाद आप की सत्यवादिता में कमी आ सकती है। आपके पारिवारिक स्नेह में भी कमी के योग बन सकते हैं। हीरा सप्तमेश का रत्न है इसलिए इस रत्न धारण से आपके ग्रहस्थ सुख में अत्यधिक उतार चढ़ाव आ सकते हैं। भाईयों से वियोग, स्वजनों से विरोध और कलह उत्पन्न हो सकता है।

दशानुसार रत्न विचार

केतु

(19/03/2023 - 19/03/2030)

केतु की दशा में आपका मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, गोमेद, लहसुनिया व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना रत्न नेष्ट हैं और हीरा, मोती व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

शुक्र

(19/03/2030 - 19/03/2050)

शुक्र की दशा में आपका गोमेद व मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, पन्ना व नीलम रत्न नेष्ट हैं और हीरा व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



सूर्य
(19/03/2050 - 18/03/2056)

सूर्य की दशा में आपका मूंगा, माणिक्य व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना व मोती रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, हीरा व नीलम रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

चन्द्र
(18/03/2056 - 19/03/2066)

चन्द्र की दशा में आपका मूंगा रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य, पुखराज व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

पन्ना, मोती व नीलम रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

मंगल
(19/03/2066 - 19/03/2073)

मंगल की दशा में आपका मूंगा व पुखराज रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

माणिक्य व गोमेद रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

लहसुनिया, मोती व नीलम रत्न नेष्ट हैं और पन्ना व हीरा रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।

राहु
(19/03/2073 - 19/03/2091)

राहु की दशा में आपका गोमेद रत्न धारण करना श्रेष्ठ है। दशा का पूर्ण फल प्राप्त करने के लिए उपरोक्त रत्न अवश्य धारण करें।

पुखराज, मूंगा व माणिक्य रत्न शुभ हैं। इस दशा में विशेष फल प्राप्त करने हेतु इन शुभ रत्नों में से उसके कारकत्व अनुसार रत्न धारण कर सकते हैं।

नीलम व पन्ना रत्न नेष्ट हैं और लहसुनिया, हीरा व मोती रत्न वर्जित हैं। नेष्ट या वर्जित रत्नों को ना धारण करना ही श्रेयस्कर है क्योंकि ये लाभ कम व हानि अधिक कर सकते हैं।



शुभ रत्न

आपका शुभ रत्न - गारनेट

आपका जन्म मेष राशि के लग्न में हुआ है। इसका स्वामी मंगल होता है। मंगल सबसे अधिक महत्वपूर्ण ग्रह है क्योंकि यह चंद्र के पश्चात पृथ्वी के सबसे अधिक नजदीक है। किसी भी जातक के लिये लग्न सबसे अधिक महत्वपूर्ण होता है, क्योंकि इससे जातक की आयुष्य, मान-सम्मान, प्रतिष्ठा, सुख, समृद्धि, स्वभाव, भौतिक संरचना तथा सुख का ज्ञान होता है। यदि किसी व्यक्ति का लग्न बलवान हो तो उस जातक को जीवन में सभी सुखों की प्राप्ति होते हुए अच्छी पद प्रतिष्ठा एवं मान सम्मान की प्राप्ति होती है।

अतः मेष राशि के लग्न वाले जातकों को मेष राशि के स्वामी ग्रह मंगल को बलवान बनाना, पूजा, अनुष्ठान, मंत्र पूजा आदि करना श्रेष्ठ माना जाता है। मंगल ग्रह के लिये गारनेट रत्न धारण किया जाता है। इस रत्न को यदि अंगूठी में धारण किया जाये तो जातक को उपर्युक्त सभी लाभ मिलेंगे अर्थात् जातक सुखी, प्रसन्नचित, स्वस्थ जीवन व्यतीत करते हुए आनंदपूर्ण जीवन व्यतीत करता है। वैसे भी मंगल सेनापति पद व ऊर्जा का प्रतिनिधि ग्रह है जिससे जातक को लीडरशिप गुण की प्राप्ति तथा अपनी टीम में नायक का गुण व टीम से सम्मान प्राप्त होता है।

इस रत्न को धारण करने से जातक को छोटे भाई का सहयोग भी प्राप्त होता है। मंगल ग्रह शक्ति एवं छोटे भाई का प्रतिनिधि ग्रह है। जिसको रक्त से संबंधित रोग जैसे उच्च रक्तचाप या निम्न रक्तचाप या रक्त संबंधी संक्रमण जैसे रोग हों तो उनको भी इस रत्न को धारण करने से लाभ प्राप्त होता है तथा जातक में साहस व शक्ति का संचार होता है।

गारनेट रत्न को अंगूठी बनाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण किया जाता है। क्योंकि अनामिका अंगुली हस्तरेखा शास्त्र में सूर्यकी अंगुली मानी जाती है तथा सूर्य ग्रह मंगल को अपना मित्र ग्रह मानता है। गारनेट रत्न मंगल का रत्न है, अतः इसके वार स्वामी अर्थात् मंगलवार को ही धारण किया जाता है। इसको धारण करने का उपयुक्त समय प्रातःकाल मंगल की होरा में श्रेष्ठ होता है। मंगलवार के दिन सूर्योदय काल से एक घंटे तक का समय मंगल की होरा का होता है। गारनेट को यदि मंगलवार के साथ-साथ मंगल के नक्षत्र अर्थात् मृगशिरा, चित्रा और धनिष्ठा में धारण किया जाये तो वह और भी उत्तम होता है।

गारनेट को धारण करने से पूर्व इसको गंगाजल एवं पंचामृत से शुद्ध करके, लकड़ी के एक पट्टे पर लाल रंग के कपड़े पर रखकर इसके सम्मुख, धूप, दीप, अगरबत्ती जलाकर, मंगल के 108 मंत्रों का जाप करते हुए अभिमंत्रित करके माथे से लगाकर सीधे हाथ की अनामिका अंगुली में धारण करना चाहिए।

मंगल का मंत्र - ॐ अं अंगारकाय नमः

इसको धारण करने के पश्चात यदि मंगल से संबंधित पदार्थ जैसे गेहूं, तांबा, गुड़, सवा मीटर लाल कपड़े का दान करें तो गारनेट रत्न की अंगूठी धारण करना और भी अधिक

फलदायी होता है। इसके अतिरिक्त अंगूठी धारण करने के पश्चात भी प्रतिदिन मंगल का 108 बार प्रतिदिन स्नानादि के पश्चात मंत्र पाठ करें या हनुमान जी की पूजा करें और हनुमान चालीसा का पाठ करें तो यह गारनेट रत्न की अंगूठी आपको लगातार शुभ फल देती रहेगी। प्रत्येक मंगलवार को हनुमान जी को प्रसाद चढ़ाना इसमें अधिक शुभकारी साबित होता है।

मेष लग्न वाले जातक यदि गारनेट रत्न की अंगूठी विधि विधान के साथ धारण करते हैं एवं मंत्र जाप द्वारा सिद्ध करते रहते हैं तो वे आजीवन स्वस्थ जीवन का आनंद उठाते हुए पूर्ण मान-सम्मान तथा प्रतिष्ठा युक्त जीवन प्राप्त करते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



रुद्राक्ष

रुद्राक्ष को शिव का अश्रु कहा जाता है। रुद्राक्ष दो शब्दों के मेल से बना है पहला रुद्र का अर्थ होता है भगवान शिव और दूसरा अक्ष इसका अर्थ होता है आंसू। माना जाता है की रुद्राक्ष की उत्पत्ति भगवान शिव के आंसुओं से हुई है। रुद्राक्ष भगवान शिव के नेत्रों से प्रकट हुई वह मोती स्वरूप बूँदें हैं जिसे ग्रहण करके समस्त प्रकृति में आलौकिक शक्ति प्रवाहित हुई तथा मानव के हृदय में पहुँचकर उसे जागृत करने में सहायक हो सकी।

रुद्राक्ष की भारतीय ज्योतिष में भी काफी उपयोगिता है। ग्रहों के दुष्प्रभाव को नष्ट करने में रुद्राक्ष का विशेष रूप से प्रयोग किया जाता है, जो अपने आप में एक अचूक उपाय है। गम्भीर रोगों में यदि जन्मपत्री के अनुसार रुद्राक्ष का उपयोग किया जाये तो आश्चर्यचकित परिणाम देखने को मिलते हैं। रुद्राक्ष की शक्ति व सामर्थ्य उसके धारीदार मुखों पर निर्भर होती है। रुद्राक्ष सिद्धिदायक, पापनाशक, पुण्यवर्धक, रोगनाशक, तथा मोक्ष प्रदान करने वाला है।

एक मुखी से लेकर चौदह मुखी तक रुद्राक्ष विशेष रूप से पाए जाते हैं, उनकी अलौकिक शक्ति और क्षमता अलग-अलग मुख रूप में दर्शित होती है। रुद्राक्ष धारण करने से जहां आपको ग्रहों से लाभ प्राप्त होगा वहीं आप शारीरिक रूप से भी स्वस्थ रहेंगे। रुद्राक्ष का स्पर्श, दर्शन, उस पर जप करने से, उस की माला को धारण करने से समस्त पापों का और विघ्नों का नाश होता है ऐसा महादेव का वरदान है, परन्तु धारण की उचित विधि और भावना शुद्ध होनी चाहिए।

रुद्राक्ष दाने पर उभरी हुई धारियों के आधार पर रुद्राक्ष के मुख निर्धारित किये जाते हैं। रुद्राक्ष के बीचों-बीच एक सिरे से दूसरे सिरे तक एक रेखा होती है जिसे मुख कहा जाता है। रुद्राक्ष में यह रेखाएं या मुख एक से 14 मुखी तक होते हैं और कभी-कभी 15 से 21 मुखी तक के रुद्राक्ष भी देखे गए हैं। आधी या टूटी हुई लाईन को मुख नहीं माना जाता है। जितनी लाईनें पूरी तरह स्पष्ट हों उतने ही मुख माने जाते हैं।

पुराणों में प्रत्येक रुद्राक्ष का अलग-अलग महत्व और उपयोगिता का उल्लेख किया गया है -

एक मुखी - सूर्य ग्रह - स्वास्थ्य, सफलता, मान-सम्मान, आत्म - विश्वास, आध्यात्म, प्रसन्नता, अनायास धनप्राप्ति, रोगमुक्ति तथा व्यक्तित्व में निखार और शत्रुओं पर विजय प्राप्त कराता है।

दो मुखी - चंद्र ग्रह- वैवाहिक सुख, मानसिक शान्ति, सौभाग्य वृद्धि, एकाग्रता, आध्यात्मिक उन्नति, पारिवारिक सौहार्द, व्यापार में सफलता और स्त्रियों के लिए इसे सबसे उपयुक्त माना गया है।

तीन मुखी - मंगल ग्रह- शत्रु शमन और रक्त सम्बन्धी विकार को दूर करने में सहायक होता है।

चार मुखी - बुध ग्रह- शिक्षा, ज्ञान, बुद्धि - विवेक, और कामशक्ति में वृद्धि प्राप्त कराता है।

पांच मुखी - गुरु ग्रह- शारीरिक आरोग्यता, अध्यात्म उन्नति, मानसिक शांति और प्रसन्नता के लिए भी इसका उपयोग किया होता है।

छः मुखी - शुक्र ग्रह - प्रेम सम्बन्ध, आकर्षण, स्मरण शक्ति में वृद्धि, तीव्र बुद्धि, कार्यों में पूर्णता और व्यापार में आश्चर्यजनक सफलता प्राप्त कराता है।

सात मुखी - शनि ग्रह- शनि दोष निवारण, धन-संपत्ति, कीर्ति, विजय प्राप्ति, और कार्य व्यापार आदि में बढ़ोतरी कराने वाला है।

आठ मुखी - राहू ग्रह- राहु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, ज्ञानप्राप्ति, चित्त में एकाग्रता, मुकदमे में विजय, दुर्घटनाओं तथा प्रबल शत्रुओं से रक्षा, व्यापार में सफलता और उन्नतिकारक है।

नौ मुखी - केतू ग्रह- केतु ग्रह से सम्बंधित दोषों की शान्ति, सुख-शांति, व्यापार वृद्धि, धारक की अकालमृत्यु नहीं होती तथा आकस्मिक दुर्घटना का भी भय नहीं रहता।

10 मुखी - भगवान महावीर- कार्य क्षेत्र में प्रगति, स्थिरता व वृद्धि, सम्मान, कीर्ति, विभूति, धन प्राप्ति, लौकिक-पारलौकिक कामनाएँ पूर्ण होती हैं।

11 मुखी - इंद्र ग्रह- आर्थिक लाभ व समृद्धिशाली जीवन, किसी विषय का अभाव नहीं रहता तथा सभी संकट और कष्ट दूर हो जाते हैं।

12 मुखी - भगवान विष्णु ग्रह- विदेश यात्रा, नेतृत्व शक्ति प्राप्ति, शक्तिशाली, तेजस्वी बनाता है। ब्रह्मचर्य रक्षा, चेहरे का तेज और ओज बना रहता है। शारीरिक एवं मानसिक पीड़ा मिट जाती है।

13 मुखी - इंद्र ग्रह- सर्वजन आकर्षण व मनोकामना प्राप्ति, यश-कीर्ति, मान-प्रतिष्ठा व कामदेव का प्रतीक है। उपरी बाधा और नजर दोष से बचाव के लिए विशेष उपयोगी है।

14 मुखी - शनि ग्रह- आध्यात्मिक उन्नति, शक्ति, धन प्राप्ति व कष्टनिवारक हैं। शनि की साढ़ेसाती या ढैया में विशेष कष्टनिवारक है।

आपकी कुंडली और रुद्राक्ष

आपकी कुंडली मेष लग्न की हैं। मेष लग्न आपको प्रखरबुद्धि प्रदान कर रहा हैं। मेष राशि अग्नि तत्व, चर राशि होने के कारण आप दृढ निश्चयी व व्यवहार कुशल है। आपका अंतः तथा वाह्य मनोभाव एक से होते हैं। आप में नेताओं के गुण विद्यमान हैं, दूसरों के अधीन रहना आपको रास नहीं आता। आप जीवन में पुरुषार्थ तथा उद्यम से उन्नति कर लेते हैं। कुण्डली में मंगल, सूर्य, चन्द्र अशुभ हों, तो पिता-माता व भाई बहनों का सुख कम प्राप्त होता है। परिवर्तनशील स्वभाव तथा शीघ्र क्रोधित होकर प्रचण्ड रूप धारण कर लेने का गुण भी आपमें पाया जाता है। अत्यधिक क्रोधावेश में कई बार आप अपनी हानि भी करवा बैठते हैं।

6, 8 व 12 भाव त्रिक भावों के नाम से जाने जाते हैं। त्रिक भावों के स्वामी व इनमें



FUTUREPOINT
Astro Solutions



बैठे ग्रह किसी न किसी प्रकार आपके जीवन में बाधा डालते हैं। जिसमें षष्ठ भाव से रोग, ऋण और शत्रुओं से होने वाले कष्टों का बोध होता है। इसका स्वामी जिस भाव में जाता है उसके शुभ फलों का कुछ न कुछ नाश होता है। जिससे मनुष्य को षष्ठ भाव के स्वामी की महादशा या अन्तर्दशा में रोग, ऋण और शत्रुओं के द्वारा दैहिक मानसिक, सामाजिक, आर्थिक या पारिवारिक कष्टों का सामना करना पड़ता है। त्रिक भावों में अष्टम भाव सर्वाधिक दुष्ट/अशुभ माना जाने वाला स्थान है। इस भाव का स्वामी अर्थात् अष्टमेश जिस भाव में बैठता है, उस भाव के फलों का नाश करता है। अष्टम स्थान में बैठने वाले ग्रहों के फलों में पापत्व बढ़ जाता है। और अशुभ फलों में वृद्धि होती है। त्रिक भावों में तीसरा भाव द्वादश भाव है। इस भाव से अनेक प्रकार के व्यय का विचार करते हैं। इसलिए इसे व्यय भाव भी कहते हैं। यह हानि, टैक्स, निद्रा, शैय्या भोग, कारागार, विदेश यात्रा और मोक्ष स्थान है। इस भाव का स्वामी और इस भाव में स्थित ग्रह भी इस भाव से संबंधित विषयों की अशुभता में वृद्धि करते हैं।

आपके लग्न के लिए बुध विशेष अशुभ ग्रह है। क्योंकि वह षष्ठ व तृतीय भाव का स्वामी है। इसी तरह शुक्र भी द्वितीयेश व सप्तमेश होने के कारण आपके लिए मारकेश हो गए हैं। शनि दशमेश होकर शुभ मगर आयेश होकर फिर पापी हो जाता है। ये सभी ग्रह आपके लिए कष्टकारी हो सकते हैं।

इसमें छठे भाव व तीसरे भाव के स्वामी बुध हैं, षष्ठेश बुध के परिणाम स्वरूप आपके अपने सम्बन्धियों से शत्रुवत सम्बन्ध हो सकते हैं। अन्य जाति के व्यक्तियों से आपकी शीघ्र मित्रता हो सकती है। शत्रुओं की अधिकता होने से आपके मानसिक और शारीरिक कष्ट समय समय पर आपको परेशान कर सकते हैं। रोगों की अधिकता भी स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकती है। धन का व्यय रोग और शत्रु सम्बन्धी विषयों का समाधान करने पर लग सकता है, जिसके कारण आर्थिक स्थिति प्रभावित हो सकती है। शत्रुओं पर विजय प्राप्ति के लिए आपको चतुरता से काम लेना होगा। यह योग आपको अल्प पराक्रमी, भाई बहनों से मतभेद और व्ययों की अधिकता दे सकता है। इस भाव में बुध रोग, ऋण और शत्रुओं का दमन कर अनेक क्षेत्रों में सफलता देता है।

अष्टमेश मंगल दुष्टता, क्रूरता, निर्दयता और शत्रुता का प्रतिनिधि है। इसके परिणाम से आप के आत्मविश्वास भाव में वृद्धि हो रही है। आप आक्रामक रुख रखते हुए, प्रयास भाव से अपने बल पर शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेंगे। मंगल की महादशा-अन्तर्दशा में लड़ाई-झगड़े, दुर्घटना और शत्रुओं के द्वारा धन, पद, प्रतिष्ठा की हानि हो सकती है। इस दशा अवधि में मन-मस्तिष्क पर नियंत्रण, कटु वचन का त्याग और स्वयं की दुर्घटनाओं से रक्षा करनी चाहिए। आपके पुरुषार्थ से किये हुए सभी कार्य पूर्ण होंगे। परन्तु स्वास्थ्य के पक्ष से यह अनुकूल नहीं है।

द्वादश भाव व्यय का स्थान है। इस भाव में बृहस्पति की मीन राशि है। आप मोक्ष प्राप्ति के मार्ग पर अग्रसर होंगे। द्वादश भाव से बृहस्पति का दृष्टि सम्बन्ध चतुर्थ भाव से होने से घर, जमीन-जायदाद और माता सुख की प्राप्ति होगी तथा दीर्घकालीन धन विनियोजन, विदेश स्थानों पर आपके व्ययों को बढ़ाएगा। वितीय विषयों के लिए गुरु की यह स्थिति अनुकूल नहीं

हैं।

आपकी कुंडली के छठे भाव में सूर्य स्थित हैं। इस भाव में सूर्य शत्रुनाशक, क्रोधी, घमंडी, कामातुर, मामा -मौसी को कष्ट, निरुत्साही, छाती के रोग, ऋणी सम्बन्धी कष्ट दे सकते हैं। हृदय सम्बन्धी रोग भी स्वास्थ्य में कमी का कारण बन सकते हैं।

शुक्र की स्थिति छठे भाव में आपको शत्रु विजयी बना रहा है, मामा का सुख, द्विभार्या योग, दाम्पत्य जीवन कष्टप्रद, अंतरजातीय विवाह की संभावनाएं देता है।

अष्टम भाव संकट, चिंता और दुर्भाग्य का स्थान हैं, इस भाव में स्थित होने से चन्द्र बलहीन हो गया हैं। चन्द्र की इस स्थिति से आपको शिशु अवस्था में गंभीर स्वास्थ्य संकटों का सामना करना पड़ा होगा। मानसिक और दैहिक निर्बलता के कारण असफलता और अन्य कष्ट भोगने पड़ सकते हैं। निर्धनता, मातर कष्ट, घर, जमीन, जायदाद और पैतृक सम्पति से सम्बंधित विवाद हो सकता हैं। चन्द्र के प्रभाव से संपत्ति सुख, विदेश स्थानों में हानि, अपयश पीड़ित हो सकते हैं।

शनि के अष्टम भाव में होने से आप दीर्घ अवधि के लिए रोगी हो सकते हैं, यह योग मानसिक सुखों में भी कमी कर रहा है। धन में कमी, व्यवसाय में हानि, पैतृक संपत्ति प्राप्ति में बाधक, संतान कष्ट दे सकता है।

इन सभी के फलों में शुभता प्राप्त करने के लिए आपको 1, 2, 4, 6, 7 मुखी रुद्राक्षों का कवच धारण करना चाहिए। यह कवच सफेद धागे में डालकर सोमवार को गंगाजल से शुद्ध कर ॐ नम शिवाय मंत्र के 108 बार जप कर धारण करना चाहिए। तदुपरांत शिवजी को कच्चा दूध चढ़ाए। क्षमतानुसार दान करे। इस प्रकार आपके जीवन में आने वाले कष्टों से छुटकारा मिलेगा एवं विशेष कष्टों में न्यूनता आएगी। कुंडली के सभी ग्रहों को शुभता प्रदान करने के लिए आप शिव कृपा रुद्राक्ष माला जो एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष से निर्मित होती है, भी धारण कर सकते हैं। एक से चौदह मुखी रुद्राक्ष माला अद्भुत व चमत्कारी फल प्रदान करती हैं।

उपरोक्त कवच बिना दशा, गोचर विचार के आपको जीवन भर धारण करना चाहिए। क्योंकि यह कवच जन्म लग्न एवं उसमें स्थित ग्रहों के अवगुणों को नियंत्रित करने के लिए आवश्यक हैं।

साढ़ेसाती विचार

चंद्रमा से जन्म कुंडली में जब गोचरवश शनि की स्थिति द्वादश, प्रथम एवं द्वितीय स्थान में होती है तो साढ़ेसाती कहलाती है। शनि की चंद्रमा से चतुर्थ एवं अष्टम भाव में स्थिति होने पर ढैया शारीरिक, मानसिक या आर्थिक कष्ट देता है। लेकिन कई बार यह आश्चर्यजनक उन्नति भी प्रदान करती है। साढ़ेसाती का प्रभाव सात वर्ष एवं ढैया का प्रभाव ढाई वर्ष रहता है।

सामान्यतया साढ़ेसाती मनुष्य के जीवन में तीन बार आती है। प्रथम बचपन में द्वितीय युवावस्था में तथा तृतीय वृद्धावस्था में आती है। प्रथम साढ़ेसाती का प्रभाव शिक्षा एवं माता-पिता पर पड़ता है। द्वितीय साढ़ेसाती का प्रभाव कार्यक्षेत्र, आर्थिक स्थिति एवं परिवार पर पड़ता है परंतु तृतीय साढ़ेसाती स्वास्थ्य पर अधिक प्रभाव करती है।

निम्नलिखित तालिका में साढ़ेसाती का समय तथा प्रत्येक ढैया का शुभाशुभ फल इंगित किया गया है।

प्रथम चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	16/10/1985-17/12/1987	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	17/12/1987-21/03/1990 20/06/1990-15/12/1990	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	05/03/1993-15/10/1993 10/11/1993-02/06/1995 10/08/1995-16/02/1996	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	23/07/2002-08/01/2003 07/04/2003-06/09/2004 13/01/2005-26/05/2005	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	15/11/2011-16/05/2012 04/08/2012-02/11/2014	-----

द्वितीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	02/11/2014-26/01/2017 21/06/2017-26/10/2017	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	26/01/2017-21/06/2017 26/10/2017-24/01/2020	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	29/04/2022-12/07/2022 17/01/2023-29/03/2025	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	31/05/2032-13/07/2034	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	28/01/2041-06/02/2041 26/09/2041-11/12/2043 23/06/2044-30/08/2044	-----

तृतीय चक्र:

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया	11/12/2043-23/06/2044 30/08/2044-08/12/2046	-----
साढ़ेसाती तृतीय ढैया	08/12/2046-06/03/2049 10/07/2049-04/12/2049	-----
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया	25/02/2052-14/05/2054 02/09/2054-05/02/2055	-----
अष्टम स्थानस्थ ढैया	11/07/2061-13/02/2062 07/03/2062-24/08/2063 06/02/2064-09/05/2064	-----
साढ़ेसाती प्रथम ढैया	04/11/2070-05/02/2073 31/03/2073-23/10/2073	-----

शनि का ढैया फल

ढैया के प्रकार

साढ़ेसाती द्वितीय ढैया
साढ़ेसाती तृतीय ढैया
चतुर्थ स्थानस्थ ढैया
अष्टम स्थानस्थ ढैया
साढ़ेसाती प्रथम ढैया

फल

अशुभ
शुभ
शुभ
शुभ
शुभ

क्षेत्र

दुर्घटना
भाग्योदय
धनार्जन
पराक्रम
दम्पति



FUTUREPOINT
Astro Solutions



साढ़ेसाती के उपाय

शनि की साढ़ेसाती के अशुभ प्रभावों को कम करने के लिये दान, पूजन, व्रत, मंत्र आदि उपाय किये जा सकते हैं। इसके लिये शनिवार को काला कंबल, उड़द की दाल, काले तिल, चर्म-पादुका, काला कपड़ा, मोटा अनाज, तिल तथा लोहे का दान करना चाहिये। शनिदेव की पूजा एवं शनिवार का व्रत रखना चाहिये। उपवास के दिन उड़द की दाल से बनी वस्तु, चने, बेसन, काले तिल, काला नमक तथा फलों का ही सेवन करना चाहिये। साथ ही स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा शनि के निम्न मंत्र के 19000 जप संपन्न करवाने चाहिये।

ॐ प्रां प्रीं प्रौं सः शनैश्चराय नमः ।।

शनि की साढ़ेसाती में शारीरिक, मानसिक, पारिवारिक शांति एवं समृद्धि, आर्थिक सुदृढ़ता तथा कार्यक्षेत्र में उन्नति के लिये निम्नलिखित महामृत्युंजय मंत्र के 125000 जप स्वयं या किसी योग्य पंडित के द्वारा करवाने चाहिये।

**ॐ त्र्यंबकम यजामहे सुगन्धिं पुष्टिवर्धनम् ।
उर्वारुकमिव बन्धनान्मृत्योर्मुक्षीय मामृतात् ।।**

वैकल्पिक रूप से निम्नलिखित मंत्र के प्रतिदिन 108 जप किये जा सकते हैं।

ॐ हौं जूं सः ॐ भूर्भुव स्वः ॐ ।।

शनि की साढ़ेसाती के शुभत्व को बढ़ाने के लिये शनिवार के दिन आप 5 1/4 रत्ती का नीलम रत्न पंचधातु में (सोना, चांदी, तांबा, लोखंड, जस्ता) या घोड़े की नाल या नाव की कील से निर्मित लोहे की अंगूठी धारण करें। लोहे की अंगूठी आप दाएं हाथ की मध्यमा अंगुली में धारण करें।

अंगूठी शुक्ल पक्ष की शनिवार की सायं सूर्यास्त के समय धारण करें। पुष्य, अनुराधा या उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र अति शुभ हैं। उस दिन शनिवार का उपवास भी करना चाहिए। अंगूठी धारण करने से पूर्व इसे शुद्ध दूध एवं गंगाजल में स्नान कराना चाहिए तथा धूप आदि जलाकर शनि का पूजन करना चाहिए एवं निम्न मंत्र की एक माला या 108 बार जप करना चाहिए। नीलम मध्यमा उंगली में या गले में पेन्डेंट बनाकर धारण करें।

ॐ शं शनैश्चराय नमः ।

अंगूठी धारण करने के पश्चात शनि की वस्तुओं का दान देना चाहिए। इससे शनि के अशुभ प्रभाव में कमी आयेगी तथा आपकी सुख शांति एवं समृद्धि में वृद्धि होगी।

श्री हनुमान चालीसा एवं श्री हनुमान अष्टक का पाठ करना श्रेष्ठ है।

मांगलिक विचार

जब वर या कन्या की कुंडली में मंगल लग्न, चतुर्थ, सप्तम, अष्टम तथा द्वादश भाव में हो तो मांगलिक दोष कहलाता है। यथोक्तम्

**लग्ने व्यये च पाताले जामित्रे चाष्टमे कुजे ।
स्त्री भर्तुर्विनाशं च भर्ता च स्त्री विनाशनम् ।**

मांगलिक दोष लग्न से अधिक प्रबल माना जाता है लेकिन चन्द्रमा से इसका दोष लग्न की अपेक्षा अल्प होता है। यदि शास्त्रानुसार वर एवं कन्या का मांगलिक दोष भंग हो जाता है तो उनका दाम्पत्य जीवन सुख एवं प्रसन्नतापूर्वक व्यतीत होता है। इसके विपरीत बिना दोष भंग हुए मांगलिक वर-कन्याओं को जीवन में कई प्रकार की अनावश्यक समस्याओं तथा व्यवधानों का सामना करना पड़ता है। अतः विवाह से पूर्व शुद्ध कुण्डली मिलान से इस दोष का उचित निवारण करके ही दाम्पत्य जीवन प्रारम्भ करना चाहिए जिससे जीवन में शान्ति तथा सम्पन्नता बनी रहे।

आपकी जन्म कुंडली में मंगल की स्थिति पंचम भाव में है। पंचम भाव संतति उच्चशिक्षा तथा बुद्धि का प्रतिनिधि भाव है अतः इसके प्रभाव से आप पुत्र संतति से युक्त रहेंगे तथा उनसे आपको जीवन में यथोचित सुख की प्राप्ति होगी लेकिन संतति प्राप्ति में किंचित विलम्ब हो सकता है। जीवन में आप स्वपरिश्रम एवं बुद्धिबल से उच्च शिक्षा अर्जित करने के लिए सदैव प्रयत्नशील रहेंगे यद्यपि इसमें यदा कदा समस्याएं भी उत्पन्न होंगी परन्तु इनका सामना करने में आप सफल रहेंगे। आपकी तीव्र बुद्धि होगी तथा यदा कदा उग्रता के भाव का भी प्रदर्शन करेंगे। आपकी प्रवृत्ति किसी भी कार्य को शीघ्रता से प्रारंभ करने की रहेगी। साथ ही सरकार या उच्चाधिकारी वर्ग से भी आपके संबंध बने रहेंगे तथा उनसे न्यूनाधिक लाभ एवं सहयोग समय समय पर प्राप्त होता रहेगा।

पंचम भाव में स्थित मंगल की चतुर्थ दृष्टि अष्टम भाव पर रहेगी इसके प्रभाव से आप गर्मी पित या रक्त विकार आदि से यदा कदा शारीरिक कष्ट प्राप्त कर सकते हैं परन्तु इसके प्रभाव से आपको विशिष्ट या अचानक धन लाभ का भी जीवन में योग बनता है। साथ ही सांसारिक महत्व के कार्यों में भी यदा कदा आपको समस्याओं का सामना करना पड़ेगा लेकिन उनका समाधान करने में आप समर्थ रहेंगे। एकादश भाव पर मंगल की दृष्टि आर्थिक उन्नति के लिए शुभ रहेगी इसके प्रभाव से आप जीवन में प्रचुर मात्रा में धन अर्जित करेंगे तथा धनवान पुरुष के रूप में जाने जाएंगे। आपके आय स्रोत भी एक से अधिक होंगे तथा सामाजिक मान सम्मान की भी वृद्धि होगी। द्वादश भाव पर मंगल की दृष्टि से आप यदा कदा व्यय अधिक मात्रा में करेंगे जो शुभाशुभ कार्यों में होगा। इससे आपके बाएं नेत्र में कोई निशान या कमजोरी भी हो सकती है। लेकिन दाम्पत्य जीवन का उपभोग आप सामान्यतया प्रसन्नता पूर्वक करते रहेंगे।

इस प्रकार पंचम भावस्थ मंगल के प्रभाव से आप जीवन में संतति तथा अन्य

आवश्यक सुख संसाधनों से युक्त रहेंगे तथा न्यूनाधिक समस्याओं का सामना करते हुए अपने दाम्पत्य जीवन को सुख पूर्वक व्यतीत करने में समर्थ रहेंगे।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

कालसर्प योग

अग्रे राहुरधः केतुः सर्वे मध्यगताः ग्रहाः ।
योगाऽयं कालसर्पाख्यो शीघ्रं तं तु विनाशय ॥

आगे राहु हो एवं नीचे केतु मध्य में सभी (सातों) ग्रह विद्यमान हो तो कालसर्प योग बनता है। द्वादश भावों में राहु की स्थिति के अनुसार काल सर्प योग मुख्यतः द्वादश प्रकार के होते हैं। वे हैं-

1. अनंत, 2. कुलिक, 3. वासुकि, 4 शङ्खपाल, 5. पद्म, 6. महापद्म, 7. तक्षक, 8. कर्कोटक, 9. शङ्खचूड, 10. घातक, 11. विषधर, 12. शेषनाग ।

यह योग उदित अनुदित भेद से दो प्रकार के होते हैं राहु के मुख में सभी सातों ग्रह ग्रसित हो जाएं तो उदित गोलाब्ध नामक योग बनता है एवं राहु की पृष्ठ में यदि सभी ग्रह हों तो अनुदितन गोलाब्ध नामक योग बनता है।

इस योग में उत्पन्न जातक को मानसिक अशांति, धनप्राप्ति में बाधा, संतान अवरोध एवं गृहस्थी में प्रतिपल कलह के रूप में प्रकट होता है। प्रायः जातक को बुरे स्वप्न आते हैं। कुछ न कुछ अशुभ होने की आशंका मन में बनी रहती है। जातक को अपनी क्षमता एवं कार्यकुशलता का पूर्ण फल प्राप्त नहीं होता है, कार्य अक्सर देर से सफल होते हैं। अचानक नुकसान एवं प्रतिष्ठा की क्षति इस योग के लक्षण हैं।

जातक के शरीर में वात पित्त त्रिदोषजन्य असाध्य रोग अकारण उत्पन्न होते हैं। ऐसे रोग जो प्रतिदिन क्लेश (पीडा) देते हैं तथा औषधि लेने पर भी ठीक नहीं होते हों, काल सर्प योग के कारण होते हैं। काल सर्प योग के उपाय इन कष्टों से राहत के लिये आवश्यक हो जाते हैं।

जातक पर काल सर्प योग का प्रभाव

आपकी जन्मपत्रिका में काल सर्प योग विद्यमान नहीं है। अतः आपको इस योग के लिए शांति आदि की आवश्यकता नहीं है एवं आप पूर्ण रूप से सुखी जीवन व्यतीत कर सकेंगे।

पितृदोष विचार

पितृदोष क्या है ?

हमारे पूर्वज या परिवार के सदस्य मृत्योपरांत पितृ संज्ञा प्राप्त करते हैं। पितृ हमारे और भगवान के बीच की कड़ी होते हैं। यदि ये प्रसन्न होते हैं तो जातक सुखी जीवन भोगता है, लेकिन यदि किसी कारणवश ये अप्रसन्न हो जाते हैं तो जातक को अनेक प्रकार की व्याधियाँ व कष्ट झेलने पड़ते हैं।

कालांतर में पितृ या तो मोक्ष को प्राप्त करते हैं, या पृथ्वी लोक पर पुनः जन्म ले लेते हैं। यदि परिवार के सभी पितरों का पुनर्जन्म या मोक्ष हो गया हो तो कुछ समय के लिए उस परिवार के कोई पितृ नहीं होते। ऐसे में जातक सुख दुख अपनी कुंडली अनुसार प्राप्त करता है। अतः परिवार के सदस्यों को चाहिए कि जब तक वे पितृ लोक में हैं तब तक तर्पणादि से उनकी सेवा करें। यदि पितृ प्रसन्न रहते हैं तो आशीर्वाद स्वरूप जातक चहुमुखी प्रगति प्राप्त करता है।

पितृ अप्रसन्न, दुःखी एवं अतृप्त होते हैं यदि किसी पूर्वज की अंतिम इच्छा पूर्ण न हुई हो, या किसी के द्वारा श्रापित हों या असामयिक मृत्यु हो गई हो। पितृ योनि में रहते हुए भी उन्हें भोजन की आवश्यकता होती है। यदि परिवार के सदस्य तर्पणादि द्वारा भोजन नहीं देते हैं तो वे भूख से व्याकुल हो जाते हैं। पितृ विभिन्न प्रकार के कष्टों की अनुभूति करते हैं जब तक कि जातक पितरों की शांति हेतु पूजन-पाठ, पिंडदान, तर्पण आदि न करे।

पितृ दोष अपने कर्मों के कारण न हो करके, अपने माता-पिता या पूर्वजों के कर्मों के कारण होते हैं, क्योंकि यह दोष तो जातक के जन्म से जन्मपत्री में विद्यमान होता है जबकि कर्म तो जन्म के बाद ही बनते हैं। अतः पितृदोष ऐसा दोष है जिसका कोई कारण समझ में नहीं आता, केवल लक्षण दर्शित होते हैं। जन्मपत्री में भी शुभ दशा व गोचर के योग होते हुए भी हमें हमारे कर्मों का फल प्राप्त नहीं होता, या घर में सदैव कलह, अशांति, धन की कमी व बीमारी लगी रहती है। संतान नहीं होती या संतान विक्षिप्त होती है, बच्चों के विवाह में अड़चन आती है या उनके विकास में अवरोध आते हैं। अतः जब भी किसी प्रकार की समस्या बार-बार आती है एवं कोई कारण नजर न आता हो तो हमें पितृ दोष की शांति करवानी चाहिए जब तक कि वातावरण और परिस्थितियाँ अनुकूल न हो जाएं।

पितृदोष लक्षण

1. परिवार में आकस्मिक मृत्यु या दुर्घटना होना।
2. आनुवांशिक बीमारी होना और लंबी अवधि तक बीमारी का चलना।
3. परिवार में शारीरिक रूप से विकलांग या अनचाहे बच्चे का जन्म होना।
4. परिवार में बच्चों द्वारा असम्मान या प्रताड़ना का व्यवहार करना।
5. गर्भ धारण न होना या गर्भपात होना।
6. परिवार के किसी सदस्य का विवाह न होना।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



7. परिवार में किसी बात को लेकर झगड़ा-फसाद होना।
8. कभी खत्म न होने वाली गरीबी परिवार में हो जाना।
9. बुरी आदतों की लत लग जाना।
10. परिवार में बार-बार केवल कन्या संतान का जन्म होना।
11. शिक्षा में बाधाएं आना।
12. स्वप्न में सांप दिखाई देना।
13. माथे पर गंदी करतूतों का कलंक लगना।
14. परिवार में किसी बुजुर्ग के बाल सफेद होने के पश्चात पीले होने लगना या काली खांसी होना।
15. परिवार के किसी सदस्य को स्वप्न में पूर्वज द्वारा खाना या कपड़े मांगते हुए दिखना।

पितृ की पहचान :

1. श्रीमद् भगवद् गीता के ग्यारहवें अध्याय का पाठ करें तो आपको कुछ दिनों में ही स्वप्न में पितृ दर्शन होंगे।
2. रात को सोने से पहले हाथ पैर धोकर अपने मन में अपने पितृ से प्रार्थना करें कि जो भी मेरे पितृ हैं वे मुझे दर्शन दें।
3. यदि आपका कोई कार्य अटक रहा है तो अपने पितृ को याद कीजिए और उन्हें कहें कि यदि आप हैं तो मेरा अमुक कार्य हो जाए। मैं आपके लिए शांति पाठ कराऊंगा। आपकी ऐसी प्रार्थना से कार्य सिद्धि हो जाने पर यह प्रमाणित हो जाएगा कि आपको पितृ शांति करवानी चाहिए।

पितृ दोष उपाय :

1. श्राद्ध पक्ष में मृत्यु तिथि के दिन तर्पण व पिंडदान करें। ब्राह्मण को भोजन कराएं व वस्त्र/दक्षिणा आदि दें।
2. यदि मृत्युतिथि न मालूम हो तो श्राद्ध पक्ष की अमावस्या के दिन तर्पण व पिंडदानादि कर्म करें।
3. प्रत्येक अमावस्या विशेषतः सोमवती अमावस्या को पितृभोग दें। इस दिन गोबर के कंडे जलाकर उसपर खीर की आहुति दें। जल के छींटे देकर हाथ जोड़ें व पितृ को नमस्कार करें।
4. सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें व गायत्री मंत्र का जप करें।
5. पीपल के पेड़ पर जल, पुष्प, दूध, गंगाजल व काले तिल चढ़ाकर पितृ को याद करें, माफी और आशीष मांगें।
6. रविवार के दिन गाय को गुड़ या गेहूं खिलाएं।
7. लाल किताब के अनुसार परिवार में जहां तक खून का रिश्ता है जैसे दादा, दादी, माता, पिता, चाचा, ताया, बहन, बेटी, बुआ, भाई सबसे बराबर-बराबर धन, 1, 5 या दस रुपए लेकर मंदिर में दान करने से पितृ ऋण से मुक्ति मिलती है।
8. हरिवंश पुराण का श्रवण और गायत्री जप पितृ शांति के लिए लोकप्रसिद्ध है।
9. गया या त्र्यंबकेश्वर में त्रिपिंडी श्राद्ध या नन्दी श्राद्ध करें।
10. नारायणबलि पूजा करवाएं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



11. पितृ गायत्री का अनुष्ठान करवाएं -

ॐ देवताभ्य पितृभ्यश्च महायोगिभ्येव च ।

नमः स्वाहायै स्वधायैः नित्यमेव नमो नमः ।।

12. पितृ दोष निवारण उपायों में गया में पिंडदान, गया श्राद्ध तथा पितृ भोग अर्पण आदि क्रियाएं करते हुए उपरोक्त पितृ गायत्री मंत्र का उच्चारण करना चाहिए ।

13. श्री कृष्ण मुखामृत गीता का पाठ करें ।

पितृ पूजा के लिए आवश्यक निर्देश :

1. पितरों को मांस वाला भोजन न अर्पित करें ।
2. पूजा के दिन स्वयं भी मांस भक्षण न करें ।
3. पितृ पूजा में स्टील, लोहा, प्लास्टिक, शीशे के बर्तन का प्रयोग न करें । मिट्टी या पत्तों के बर्तनों का ही प्रयोग करें ।
4. पितृ पूजा में घंटी न बजाएं ।
5. पितृ पूजा करने वाले व्यक्ति की पूजा में व्यवधान न डालें ।
6. बुजुर्गों का सम्मान करें ।
7. पितरों के निमित्त किये जाने वाले गौ-दान से पितृ तृप्त होते हैं ।
8. घर में पीने का पानी रखा जाता है उस स्थान पर विशेष पवित्रता रखें । यह स्थान पितृों का स्थान माना जाता है ।
9. पितृ कर्म हेतु साल में 12 मृत्यु तिथि, 12 अमावस्या, 12 पूर्णिमा, 12 संक्रांति, 12 वैधृति योग, 24 एकादशी व श्राद्ध के 15 दिन मिलाकर कुल 99 दिन होते हैं ।

आपकी कुण्डली में पितृदोष

- नवम् भाव का स्वामी नीचस्थ है और उस पर शनि का प्रभाव है ।
- लग्नेश शनि व राहु दोनों से प्रभावित है ।

आपकी कुंडली में मंगल और गुरु के कारण पितृदोष है ।

आपकी कुंडली में मंगल पितृदोष कारक ग्रह है अतः परिवार के किसी पुरुष सदस्य द्वारा क्रोधवश किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आपको नौकर, छोटे भाईयों को दान देना चाहिए ।

आपकी कुंडली में वृहस्पति पितृदोष कारक ग्रह है अतः दादाजी द्वारा किये गये पापकर्म आपके पितृदोष का कारण है । इस दोष के निवारणार्थ आप विद्वानजनों, वृद्ध ब्राह्मण और पति को दान दें । विद्यालय में पुस्तकों का दान करें ।

आपकी कुंडली में पितृदोष का योग है परंतु यदि आपको अपने जीवन में उपरोक्त वर्णित पितृदोष लक्षण में से किसी प्रकार का कष्ट या परेशानी की अनुभूति नहीं हो रही है तो आपको पितृदोष संबंधी उपाय करने की आवश्यकता नहीं है । संभव है कि किसी शुभकार्य के



FUTUREPOINT
Astro Solutions



कारण आपके पितृ प्रसन्न हो गए हों व आपको उनकी कृपा प्राप्त हो रही हो या वे मोक्ष को प्राप्त हो गए हों।

नोट :

त्रिपिण्डी श्राद्ध एवं नारायण नाग बली पितृदोष के लिए मुख्य उपाय हैं। यह स्रयंबकेश्वर में विशेष रूप से कराये जाते हैं। त्रिपिण्डी श्राद्ध में आटे को पानी में मांढ़ कर पुतले के रूप में पूर्वजों के प्रतीकात्मक पिंड बना लिये जाते हैं, उन पर मंत्रों का पाठ किया जाता है। अंत में अस्थि विसर्जन के समान उनको जल में प्रवाह कर दिया जाता है।

नारायण नागबलि, पूर्वजों के मोक्ष व उनकी इच्छा पूर्ति के लिए कराया जाता है। इसमें दो दिन श्मशान क्रिया होती है व तीसरे दिन मांगलिक पूजा की जाती है। यदि पितृदोष के कारण संतान बाधा या विवाह बाधा आदि होती है तो इस उपाय के पश्चात जातक बाधामुक्त हो जाता है और काम स्वतः बनने लगते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



ग्रह फल

सूर्य

षष्ठभाव में सूर्य हो तो जातक वीर्यवान्, मातुल कष्टकारक, तेजस्वी, शत्रुनाशक, बलवान्, श्रीमान्, निरोगी एवं न्यायवान् होता है।

कन्या राशि में रवि हो तो जातक लेखन कुशल, दुर्बल, शक्तिहीन, मन्दाग्निरोगी, व्यर्थवक्ता, साहित्य और कविता में रुचि, भाषाविद् -बुद्धिमान्, पत्रकार एवं गणितज्ञ होता है।

आपके जन्म समय में सूर्य छठे भाव में स्थित है अतः पिता के आप प्रिय रहेंगे। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहेगा तथा आयु भी अच्छी होगी। धनैश्वर्य से वे सर्वदा युक्त रहेंगे एवं जीवन में समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में आपको पूर्ण सहयोग प्रदान करेंगे। इसके साथ ही वे आपको शत्रुओं तथा अन्य सांसारिक कष्टों से नित्य सुरक्षित रखने के लिए भी तत्पर रहेंगे।

आप भी उनका हमेशा हार्दिक सम्मान करेंगे एवं नित्य उनकी आज्ञा पालन करने में भी तत्पर रहेंगे। आपके आपसी संबंध मधुर होंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे कुछ समय के लिए संबंधों में तनाव उत्पन्न होगा परन्तु उसके बाद सब कुछ सामान्य एवं पूर्ववत् हो जाएगा। इसके साथ ही आप जीवन में उन्हें हमेशा वांछित आर्थिक तथा अन्य प्रकार की सहायता करते रहेंगे तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार की कष्टानुभूति नहीं होने देंगे।

चन्द्र

आठवें भाव में चन्द्रमा हो तो जातक कामी, व्यापार से लाभवाला, विकारस्त प्रमेहमरोगी, वाचाल, स्वाभिमानी, बन्धन से दुखी होने वाला एवं ईर्ष्यालु होता है।

वृश्चिक राशि में चन्द्रमा हो तो जातक अपने माता-पिता, भाइयों आदि से अलग रहने वाला, नास्तिक, लोभी, बन्धुहीन, परस्त्रीरत, झगड़ालू, स्पष्ट वक्ता, बुरे विचार रखने वाले, दुःखी, हठी, अनैतिक विचारों वाला एवं धनी होता है।

आपके जन्मकाल में चन्द्रमा की स्थिति अष्टम भाव में है। अतः आपकी माता का स्वास्थ्य सामान्य रूप से अच्छा रहेगा एवं आयु भी लम्बी होगी। आपके प्रति उनके मन में सामान्य प्रेम विद्यमान रहेगा एवं जीवन में समस्त महत्वपूर्ण कार्यों में वे आपको सहयोग तथा प्रोत्साहन प्रदान करती रहेंगी। आपके स्वास्थ्य के प्रति वे चिन्तनशील रहेगी एवं सर्वदा आर्थिक तथा अन्य सहायता करती रहेंगी। इसके अतिरिक्त उनसे आप कभी कभी विशेष धनार्जन करने में भी सफल हो सकेंगे।

आप का भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं उनकी सेवा तथा आज्ञा का पालन करने के लिए प्रायः तत्पर ही रहेंगे। आपके परस्पर संबंध अच्छे रहेंगे परन्तु यदा कदा आपसी मतभेदों के कारण इनमें कटुता भी आयेगी लेकिन कुछ समयोपरान्त स्वतः सब कुछ सामान्य हो जाएगा। इसके साथ ही आपके परस्पर संबंध भी सामान्य ही रहेंगे।

मंगल

पंचम भाव में मंगल हो तो जातक बुद्धिमान्, चंचल, गुप्तरोगी, कृशशरीरी, रोगी, विशेष रूप से उदररोगी, व्यसनी, कपटी, उबुद्धि एवं सन्तति-क्लेश युक्त होता है।

सिंह राशि में मंगल हो तो जातक शूरवीर, सदाचारी, कार्यनिपुण, स्नेहशील, परोपकारी, ज्योतिषी, गणितज्ञ, माता-पिता का आज्ञाकारी, गुरुजनों का आदर करने वाला, उदार एवं सफल होता है।

आपके जन्म काल में मंगल पंचम भाव में स्थित है अतः आपके भाई बहनों का स्वास्थ्य ठीक ही रहेगा परन्तु यदा कदा सामान्य रूप से शारीरिक रूप से व्याकुलता भी रहेगी। आपके प्रति उनके मन में स्नेह एवं सम्मान का भाव विद्यमान रहेगा। धन धान्य से वे युक्त रहेंगे एवं जीवन में सर्वप्रकार से आपको शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में अपना सहयोग प्रदान करते रहेंगे। वे सुख दुःख में हमेशा आपका सहयोग करेंगे एवं आवश्यकतानुसार आपको आर्थिक या अन्य प्रकार की सहायता भी प्रदान करेंगे। इसके साथ ही शिक्षा संबंधी कार्यों में भी वे आपको यथोचित सहयोग प्रदान करेंगे।

आपके मन में भी उनके प्रति पूर्ण सम्मान एवं स्नेह का भाव रहेगा। आपके परस्पर संबंध मधुर रहेंगे परन्तु यदा कदा सैद्धान्तिक मतभेद भी उत्पन्न होंगे जिससे संबंधों में अल्प समय के लिए कटुता या तनाव की अनुभूति होगी। साथ ही आप सुख दुःख में उनको आर्थिक तथा अन्य प्रकार के समस्त वांछित सहयोग प्रदान करने के लिए तत्पर रहेंगे एवं आपसी सहयोग से एक दूसरे को सुख प्रदान करेंगे।

बुध

सातवें भाव में बुध हो तो जातक सुन्दर, विद्वान्, कुलीन, व्यवसायकुशल, धनी, लेखक, सम्पादक, उदार, सुखी, अल्पवीर्य, दीर्घायु एवं धार्मिक होता है।

तुला राशि में बुध हो तो जातक आस्तिक, व्यापार दक्ष, वक्ता, चतुर, शिल्पज्ञ, कुटुम्बवत्सल, उदार, अच्छा अन्तर्ज्ञान, वफादार, विनीत संतुलित मन एवं दार्शनिक होता है।

गुरु

दशम भाव में गुरु हो तो जातक सुकर्म करने वाला, प्रसिद्ध और सम्मानित प्रतिष्ठित पद पर आसीन, सदाचारी, पुण्यात्मा, ऐश्वर्यवान्, साधु, चतुर, न्यायी, प्रसन्न, ज्योतिषी, सत्यवादी, शत्रुहन्ता, राजमान्य, स्वतन्त्र विचारक, मातृपितृ भक्त, लाभवान्, धनी एवं भाग्यवान् होता है।

मकर राशि में गुरु हो तो जातक प्रवासी, द्रव्यहीन, व्यर्थपरिश्रमी, चंचलचित्त, धूर्त, असभ्य आचरण, दुःखी एवं ईर्ष्यालु होता है।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



शुक्र

षष्ठभाव में शुक्र हो तो जातक मितव्ययी, शत्रुनाशक, स्त्रीप्रिय, स्त्रीसुखहीन, बहुमित्रवान्, वैभवहीन, दुराचारी, मूत्ररोगी, दुःखी एवं गुप्तरोगी होता है।

कन्या राशि में शुक्र हो तो जातक, सुखी, भोगी, अतिकामी, सभापण्डित, रोगी, वीर्यहीन, सट्टे द्वारा धननाशक एवं अवैध सम्बन्ध रखने वाला होता है।

शनि

अष्टम भाव में शनि हो तो जातक विद्वान् स्थूलशरीर, उदार प्रकृति, कपटी, गुप्तरोगी, वाचाल, डरपोक, कुष्ठरोगी एवं धूर्त होता है।

वृश्चिक राशि में शनि हो तो जातक संकीर्ण विचारों वाला, हिंसक, कठोरधृति, उतावला, कमजोर स्वास्थ्य, बुरी आदतें, दुःखी, विष से खतरा, निर्धन स्त्रीहीन, क्रोधी, कठोर एवं लोभी होता है।

राहु

लग्न (प्रथम) में राहु हो तो जातक कामी, दुर्बल, मनस्वी, अल्पसन्तति युक्त, राजद्वेषी, नीचकर्मरत दुष्ट, स्तक्रोगी, स्वार्थी एवं बात-बात पर सन्देह करने वाला होता है।

मेष राशि में राहु हो तो जातक-पराक्रमहीन, आलसी, अविवेकी एवं अनैतिक चरित्र होता है।

केतु

सप्तम भाव में केतु हो तो जातक मतिमन्द, मूर्ख, दुःखद विवाहित जीवन, पति-पत्नी में सम्बन्ध विच्छेद, शत्रुभीरु एवं सुखहीन होता है।

तुला राशि में केतु हो तो जातक कुष्ठरोगी, दुःखी, क्रोधी एवं कामी होता है।

स्वास्थ्य, व्यक्तित्व एवं प्रकृति

आपके जन्म समय में लग्न में मेष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी मंगल है। सामान्यतया मेष लग्न में उत्पन्न जातक साहसी पराक्रमी तेजस्वी तथा परिश्रमी होते हैं तथा अपनी इन्हीं विशेषताओं से जीवन में मान सम्मान प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि अर्जित करते हैं। उनका स्वास्थ्य अच्छा रहता है एवं उनके व्यक्तित्व से सभी लोग प्रभावित तथा आकर्षित रहते हैं। ये जातक अत्यधिक सक्रिय रहते हैं फलतः जीवन में आसानी से सफलताएं इनको प्राप्त होती हैं।

अतः इस लग्न के प्रभाव से आप साहसी पराक्रमी तथा परिश्रमी पुरुष होंगे तथा अपने सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों को निर्भय होकर सम्पन्न करेंगे। आप एक स्वाभिमानी पुरुष होंगे तथा अपने परिश्रम एवं योग्यता से समाज में इच्छित आदर एवं प्रतिष्ठा अर्जित करने में समर्थ रहेंगे।

आप में तेजस्विता का भाव स्वभाव से ही विद्यमान होगा। आपका जन्म स्थान के अतिरिक्त अन्य स्थान में भाग्योदय होगा अतः वहीं पर आप मान सम्मान प्रतिष्ठा एवं प्रसिद्धि प्राप्त करेंगे तथा आपके उन्नतिमार्ग सर्वत्र प्रशस्त रहेंगे। साथ ही सांसारिक सुख संसाधनों को भी परिश्रम से अर्जित करके आनंद पूर्वक उनका उपभोग करेंगे।

लग्न में राहु के प्रभाव से आपका स्वास्थ्य सामान्य रहेगा तथा यदा कदा मानसिक रूप से परेशानी की अनुभूति कर सकते हैं लेकिन परेशानियों का सामना करने में आप समर्थ रहेंगे। अपने कुल में आप श्रेष्ठ होंगे तथा उसकी मान मर्यादा की रक्षा के लिए सर्वदा तत्पर रहेंगे। धर्म के प्रति आपके मन में श्रद्धा अवश्य रहेगी परन्तु धार्मिक कार्य कलापों को अल्प मात्रा में ही सम्पन्न करेंगे।

यद्यपि यदा कदा आप शारीरिक रूप से निर्बलता की अनुभूति करेंगे परन्तु मन में साहस एवं उत्साह का भाव बना रहेगा जिससे आपके समस्त शुभ एवं महत्वपूर्ण सांसारिक कार्य सम्पन्न होंगे तथा इनमें आपको वांछित सफलता प्राप्त होगी। आपके स्वभाव में सहिष्णुता एवं नम्रता का भाव अल्प रहेगा अतः यदा कदा आपको परेशानी का सामना करना पड़ सकता है परन्तु दृढ़ संकल्प की इच्छा से आप कार्य क्षेत्र में उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे तथा प्रचुर मात्रा में धनैश्वर्य एवं वैभव भी प्राप्त होगा।

इस प्रकार आप तेजस्वी साहसी परिश्रमी एवं लगनशील व्यक्ति होंगे तथा धनैश्वर्य को अर्जित करके सुख पूर्वक उसका उपभोग करेंगे।

धन, परिवार, आंख एवं वाणी

आपके जन्म समय में द्वितीय भाव में वृष राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक है। अतः इसके प्रभाव से आप जीवन में समस्त सांसारिक सुखों तथा धनऐश्वर्य का उपभोग करने में समर्थ रहेंगे साथ ही किसी संबंधी की सम्पत्ति आदि को भी प्राप्त कर सकते हैं क्योंकि अपने नजदीक के संबंधियों के प्रति आपके मन में हमेशा सद्भावना रहेगी तथा सुख दुख में आप उनकी सेवा तथा सहायता करने के लिए तत्पर रहेंगे। बागवानी के प्रति भी आपके मन में रुचि रहेगी तथा समय समय पर आप इस रुचि का प्रदर्शन करते रहेंगे।

आपका पारिवारिक सुख उत्तम रहेगा तथा शान्ति एवं आनन्द पूर्वक परिवार के मध्य आपका समय व्यतीत होगा। सामाजिक जनों के मध्य भी आप एक सम्माननीय पुरुष रहेंगे तथा सभी लोग आपको यथोचित मान सम्मान प्रदान करेंगे। आप स्वभाव से उदार तथा भावुक प्रवृत्ति के व्यक्ति होंगे तथा मिष्टान भक्षण के प्रति आपकी तीव्र रुचि रहेगी। साथ ही अपने सम्भाषण में हमेशा मधुर शब्दों का प्रयोग करेंगे। इसके अतिरिक्त वाहन तथा बहुमूल्य रत्नों को भी आप जीवन में प्राप्त करेंगे तथा सुख एवं प्रसन्नता पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।



शिक्षा, माता, वाहन एवं जायदाद

आपके जन्म समय में चतुर्थ भाव में कर्क राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी चन्द्रमा है अतः जीवन में आपको स्वपरिश्रम एवं पराक्रम के द्वारा ही इच्छित सुख संसाधनों एवं भौतिक वस्तुओं की प्राप्ति होगी तथा प्रसन्नता पूर्वक आप उनका उपभोग करने में समर्थ होंगे। आप एक वैभवशाली व्यक्ति होंगे तथा वैभव अर्जित करने में आपको समय समय पर कठिन परिश्रम एवं पराक्रम का सामना करना पड़ सकता है परंतु अंत में आप इसे प्राप्त करेंगे तथा समाज में एक प्रतिष्ठित व्यक्ति माने जायेंगे।

जीवन में आप को चल एवं अचल सम्पत्ति की विलम्ब से प्राप्ति होगी तथा इससे आप काफी परिश्रम से अर्जित करेंगे एवं विशेष संतुष्टि भी आपको कम ही मिलेगी। लेकिन आप प्रारंभ से ही परिश्रमी एवं पराक्रमी व्यक्ति होंगे अतः जीवन में हार कम ही मानेंगे। अतः अपने ऐश्वर्य एवं वैभव की अभिवृद्धि के लिए सदैव तत्पर रहेंगे तथा समाज में अपना स्तर बनाने में सफल होंगे।

आपका मकान सामान्य श्रेणी का होगा तथा इससे आप को विशेष संतुष्टि अल्प मात्रा में ही होगी तथापि इसको आप काफी सुन्दरतापूर्ण ढंग से सुसज्जित रखेंगे तथा इसकी सुंदरता बनाए रखने के लिए अन्य पारिवारिक जनों को भी प्रेरित करेंगे। आपका घर मध्यम श्रेणी की कालोनी में होगा तथा पड़ोसियों से भी मधुर संबंध अल्प ही होंगे परंतु सामंजस्यशील प्रवृत्ति होने के कारण सामंजस्य स्थापित करके अपना जीवन व्यतीत करेंगे। इसके अतिरिक्त जीवन में वाहन सुख भी मध्यम रूप से ही प्राप्त होगा।

आपकी माता तेजस्वी स्वभाव की महिला होंगी तथा परिवार पर उनका पूर्ण नियंत्रण रहेगा। आपके प्रति उनका सामान्यतया व्यवहार अनुकूल रहेगा परन्तु उनकी आप विशेष परवाह कम ही करेंगे। इससे आपके संबंधों में मधुरता के भाव की न्यूनता होगी। माता से आपको विशिष्ट सहयोग कम ही मिलेगा तथापि आप सुख में नहीं तो दुःख में अवश्य उनका साथ देंगे। इस प्रकार माता का सुख एवं सानिध्य आपको अल्प मात्रा में ही प्राप्त होगा।

अध्ययन में आप प्रारंभ से ही विशेष रुचि अल्प मात्रा में ही रखेंगे फलतः स्नातक परीक्षा उत्तीर्ण करने में आपको काफी परिश्रम करना पड़ेगा। आप कोई तकनीकी शिक्षा का प्रमाण पत्र प्राप्त कर सकते हैं। यदि शिक्षा के क्षेत्र में प्रारंभ से ही परिश्रम किया जाय तो इसमें किंचित सकारात्मक सफलता मिल सकती है।

प्रणय सम्बन्ध, सन्तान एवं बुद्धि

आपके जन्मसमय में पंचमभाव में सिंह राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी सूर्य है तथा मंगल भी लग्नेश होकर मित्रराशि में पंचमभाव में ही बैठा है। अतः इसके प्रभाव से आप एक बुद्धिमान व्यक्ति होंगे तथा अपनी बुद्धिमता से समस्त सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे। इससे आप उन्नति के मार्ग पर अग्रसर तो होंगे ही साथ ही सामाजिक जनो में आपके प्रभाव में वृद्धि होगी तथा वे आपकी बुद्धिमता का आदर करेंगे। आपकी बुद्धि व्यावहारिक होगी तथा शीघ्र एवं व्यावहारिक रूप से किसी भी समस्या का समाधान करने में समर्थ होंगे। वैदिक शास्त्रों एवं साहित्य में आपकी रुचि कम होगी परंतु आधुनिक शास्त्रों के प्रति विशेष लगाव होगा तथा इसके ज्ञानार्जन में तत्पर होंगे जिससे आपकी विद्वता समाज में दूर दूर तक व्याप्त होगी।

मंगल की पंचमभावस्थ स्थिति के प्रभाव से आप एक व्यावहारिक व्यक्ति होंगे तथा भावुकता के भाव की आप में न्यूनता होगी। प्रेम प्रसंगों में आपकी विशेष रुचि कम ही होगी तथापि यदि कोई प्रसंग चला भी तो इसमें आप आदर्शवादिता एवं मर्यादा का पूर्ण ध्यान रखेंगे क्योंकि आप स्वाभिमानी एवं आदर्शवादी व्यक्ति हैं। इससे आपका प्रेम प्रसंग विवाह में भी परिवर्तित हो सकता है लेकिन प्रेम में भावुकता को कोई स्थान नहीं देंगे।

लग्नेश की स्थिति पंचमभाव में होने के कारण आपको सन्तति का सुख अवश्य प्राप्त होगा तथा पुत्र की भी विलंब से परंतु निश्चित प्राप्ति होगी। आपकी संतति संख्या अल्प ही होगी तथा सभी योग्य कुशल परिश्रमी एवं बुद्धिमान होंगे। माता की अपेक्षा पिता से बच्चों का अधिक लगाव होगा तथा अपनी व्यक्तिगत समस्याओं के समाधान के लिए पिता पर अधिक निर्भर होंगे तथापि दोनों को पूर्ण सम्मान तथा आदर प्रदान करेंगे साथ ही सांसारिक महत्व के शुभ एवं महत्वपूर्ण कार्यों में माता पिता की अवश्य सलाह लेंगे। अतः बच्चों से आप सुखी एवं संतुष्ट रहेंगे तथा उनसे आपको अनावश्यक समस्याओं एवं परेशानियों का सामना नहीं करना पड़ेगा।

अध्ययन के प्रति बच्चों की प्रारंभ से ही रुचि होगी तथा शिक्षा के क्षेत्र में वे वांछित उन्नति एवं सफलता प्राप्त करेंगे। वे तेजस्वी बुद्धिमान एवं व्यावहारिक होंगे तथा अन्य सामाजिक जनो, समीपस्थ संबंधियों एवं मित्रवर्ग के मध्य अपना प्रभाव स्थापित करने में समर्थ होंगे जिससे वे सबके स्नेह एवं आदर के पात्र होंगे। बच्चों के इनगुणों से आप भी अभिभूत होंगे तथा स्वयं को गौरवान्वित महसूस करेंगे। इसके अतिरिक्त वृद्धावस्था में बच्चे आपका पूर्ण ध्यान रखेंगे तथा अपनी ओर से किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देंगे।

परिवार, विवाह एवं साझेदार

आपके जन्म समय में सप्तम भाव में तुला राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शुक्र है। साथ ही बुध भी अपनी स्थिति से सप्तम भाव को प्रभावित कर रहा है सामान्यतया तुलाराशि प्रियवक्ता भ्रमण प्रिय चंचल न्याय प्रिय एवं माता पिता के प्रति श्रद्धा रखने वाली होती है। यह वायुतत्व राशि है जिससे जातक सौम्य एवं गंभीर स्वभाव का होता है तथा बुध भी नैसर्गिक रूप से बुद्धि का कारक है जिससे जातक का सहयोगी बुद्धिमान शास्त्र तथा कला संगीत एवं साहित्य में दक्षता प्राप्त करता है।

अतः इनके प्रभाव से आपकी पत्नी सुशील शिक्षित एवं बुद्धिमती महिला होंगी तथा सांसारिक कार्यों को दक्षता से सम्पन्न करेंगी। सहित्य कला एवं संगीत के प्रति उनकी विशेष रुचि रहेगी तथा इस क्षेत्र में उन्हें कोई विशिष्ट सफलता भी प्राप्त हो सकती है। कर्तव्य परायणता का भाव भी उनमें विद्यमान रहेगा तथा परिवार समाज एवं अन्य लोगों के प्रति ईमानदारी से पूर्ण करेंगी। वह अत्यन्त ही मधुर भाषिणी होगी जिससे सभी लोग उनसे प्रसन्न तथा प्रभावित रहेंगे।

आपकी पत्नी गौरवर्ण की आकर्षक महिला होंगी तथा उनका कद भी सामान्य रहेगा। पृथ्वी तत्व बुध के प्रभाव से उनका शरीर स्वस्थ एवं पुष्ट रहेगा तथा शारीरिक संरचना भी दर्शनीय होगी। उनका व्यक्तित्व भी आकर्षक रहेगा जिससे लोग उनसे प्रभावित रहेंगे। तुला राशि के प्रभाव से सुंदरता के प्रति उनके मन में तीव्र आकर्षण रहेगा एवं सुंदर वस्तुओं का भी संग्रह करेंगी।

सप्तम भाव में बुध के प्रभाव से आपका विवाह विज्ञापन द्वारा सम्पन्न होगा या स्वयं अपनी इच्छा से प्रेम विवाह सम्पन्न करेंगे। विवाह के बाद आपके दाम्पत्य संबंधों में मधुरता रहेगी तथा एक दूसरे की भावनाओं का आदर करेंगे। साथ ही परस्पर सहयोग एवं सहमति से सांसारिक कार्य कलापों को सम्पन्न करेंगे जिससे वैवाहिक जीवन सुख पूर्वक व्यतीत होगा।

आपका विवाह किसी धनाढ्य परिवार से होगा तथा वे लोग शिक्षित एवं समाज में आदरणीय होंगे उनसे विवाह के समय आपको वांछित धन एवं अन्य बहुमूल्य उपहार प्राप्त होंगे। सास ससुर के प्रति आपका पूर्ण सम्मान का भाव रहेगा एवं वे भी आपको पुत्रवत स्नेह तथा वात्सल्य प्रदान करेंगे जिससे आपसी संबंधों में मधुरता बनी रहेगी।

सास ससुर के प्रति आपकी पत्नी की पूर्ण श्रद्धा एवं सेवा की भावना होगी तथा अपनी ओर से उन्हें किसी भी प्रकार का कष्ट नहीं होने देगी। ससुर की अपेक्षा सास से विशेष अपनत्व एवं आज्ञाकरिता का भाव रहेगा। देवर एवं ननदों को भी वह अपने सद्व्यवहार से प्रसन्न रखेंगी तथा वे भी उन्हें पूर्ण सम्मान तथा सहयोग प्रदान करेंगे। अतः सुख शांति में उनका महत्वपूर्ण योगदान रहेगा।

व्यापार में साझेदारी के लिए स्थिति अनुकूल रहेगी तथा इससे आपको वांछित

लाभ एवं उन्नति प्राप्त होगी। किसी समीपस्थ संबंधी या मातृ पक्ष से साझेदारी करने पर आपको विशिष्ट एवं वांछित लाभ की प्राप्ति होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

व्यवसाय, पिता एवं सामाजिक स्तर

आपके जन्म समय में दशम भाव में मकर राशि उदित हो रही थी जिसका स्वामी शनि है। साथ ही बृहस्पति भी केंद्र में स्थित होकर स्वनीचराशि में स्थित है। पृथ्वीतत्व मकर राशि के प्रभाव से आपका व्यवसाय सामान्य रूप से श्रमसाध्य होगा परन्तु बृहस्पति के प्रभाव से आप बौद्धिक कार्यों को भी सम्पन्न करेंगे तथा स्व बुद्धिमता योग्यता एवं परिश्रम से अपने कार्य क्षेत्र में इच्छित सफलता अर्जित करेंगे। साथ ही कार्य क्षेत्र में आपको मान सम्मान भी प्राप्त होगा।

द्वादशेश एवं नवमेश बृहस्पति की केन्द्रभाव दशम में स्थिति के प्रभाव से आपके लिए आजीविका सम्पन्न करने के लिए शिक्षा विभाग, पांडित्यकार्य धर्मोपदेशक प्रोफेसर, न्यायधीश, वकील, वेरिक्टर, सचिव, सलाहकार, बैंक क्षेत्र, शेयर विभाग, व्यवस्थापक, प्रबन्धक, कार्मिक क्षेत्र आदि विभाग शुभ एवं उन्नति दायक होंगे। यदि इन विभागों एवं क्षेत्रों में आप अपना कार्यक्षेत्र प्रारम्भ करेंगे तो इनमें आपको इच्छित सफलता की प्राप्ति होगी एवं शीघ्र ही किसी उच्च पद को प्राप्त करने में समर्थ होंगे। व्यापार आदि के क्षेत्र में आप लवण, रासायनिक पदार्थ, सुवर्ण, खनिज पदार्थों का क्रय विक्रय करने से वांछित धनार्जन करने में सफल होंगे तथा व्यापार में इन क्षेत्रों में आपको इच्छित सफलता की प्राप्ति होगी साथ ही वाहन या चतुष्पदों का व्यापार भी लाभदायक रहेगा तथा इनसे प्रचुर लाभ मिलेगा। इसके अतिरिक्त शेयर मार्केट में काम करने किसी कम्पनी को चलाने अथवा ब्याज या सूद से भी आप अपने आय स्रोतों की वृद्धि करने में समर्थ होंगे। अतः यदि आप व्यापार करना चाहते हैं तो इन्हीं क्षेत्रों में अपना कार्य प्रारम्भ करना चाहिए।

नवमेश गुरु की केन्द्रस्थिति के प्रभाव से कार्यक्षेत्र में आप वांछित उन्नति एवं सफलता अर्जित करेंगे परन्तु गुरु के नीचस्थ प्रभाव से इसमें किंचित मात्रा में विलम्ब या व्यवधान भी हो सकते हैं परन्तु आपमें आत्मविश्वास की कमी नहीं होगी अतः स्वपरिश्रम एवं बुद्धिमता से आप अपने कार्य क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियों की प्राप्ति के लिए संधर्षरत रहेंगे तथा अंततोगत्वा इसमें आपको सफलता मिलेगी। साथ ही आप किसी संस्था में कोई पदाधिकारी भी बन सकते हैं। दशम भाव में चर राशि के प्रभाव से आप किसी स्वतंत्र कार्य या व्यवसाय भी सम्पन्न कर सकते हैं।

दशम भाव में नवमेश बृहस्पति के प्रभाव से आपके पिताजी बुद्धिजीवी वर्ग के व्यक्ति होंगे तथा अन्य जनों पर अपना प्रभाव स्थापित करने में उनको पूर्ण सफलता प्राप्त होगी। साथ ही अपने क्षेत्र में वे आदरणीय माने जाएंगे। आपके प्रति उनके मन में पूर्ण स्नेह का भाव रहेगा तथा आपकी शिक्षा दीक्षा एवं उन्नति के प्रति वे पूर्ण चिन्तित रहेंगे तथा इसके लिए उनका पूर्ण प्रयास रहेगा। आप भी उनके प्रति सम्मान एवं श्रद्धा का भाव रखेंगे परन्तु नीचस्थ बृहस्पति के प्रभाव से युवावस्था में आपके व्यक्तिगत संबंधों में तनाव तथा मतभेद के भाव रहेंगे जिससे आपसी मधुरता के भाव में कमी आएगी। अतः यदि आप दोनों सामंजस्य स्थापित कर सकें तो एक दूसरे के लिए लाभदायक सिद्ध होंगे तथा शांति पूर्वक अपना समय व्यतीत करेंगे।

वार्षिक फलादेश - 2025

वर्ष के प्रारम्भ में कुम्भस्थ शनि एकादश भाव में रहेंगे व मीनस्थ राहु द्वादश भाव में रहेंगे और 29 मार्च को शनि मीन राशि द्वादश भाव में और 30 मई को राहु कुम्भ राशि एकादश भाव में प्रवेश करेंगे। वर्ष के शुरुआत में वृष राशि का गुरु द्वितीय भाव में रहेंगे और 14 मई को मिथुन राशि तृतीय भाव में प्रवेश करेंगे और अतिचारी हो कर 18 अक्टूबर को कर्क राशि चतुर्थ स्थान में गोचर करेंगे और वक्री होकर फिर से 5 दिसम्बर को मिथुन राशि तृतीय भाव में आ जाएंगे।

व्यवसाय

व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा कार्य व्यवसाय में अच्छा लाभ होगा। व्यापार में बड़े भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। कार्य कुशलता एवं दक्षता के बल पर सफलता प्राप्त करेंगे परन्तु 29 मार्च के बाद द्वादस्थ शनि के प्रभाव से आप अपने कार्यों को अंजाम तक पहुंचाने में कठिनाई का अनुभव करेंगे।

आपके कार्य क्षेत्र में गुप्त शत्रुओं द्वारा रुकावटें डाली जा सकती हैं इसलिए बिना किसी पर विश्वास किये आप अपनी बौद्धिक शक्ति के अनुसार कार्य करते रहें। इस समय के अंतराल में कोई नया व्यापार प्रारम्भ न करें। यदि आप साझेदारी में कोई कार्य कर रहे हैं, तो 14 मई के बाद लाभ प्राप्त होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ बढ़िया रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके धनागम में निरंतरता बनी रहेगा जिससे आप इच्छित बचत करके आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बना सकते हैं। रत्न आभूषण इत्यादि का सुख प्राप्त होगा।

अष्टम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पैतृक सम्पत्ति, या ससुराल से धन प्राप्त होने का योग बन रहा है। 30 मई के बाद राहु ग्रह का गोचर एकादश स्थान में हो रहा है उस समय आपको अचानक धन लाभ होगा जिससे आपको पुराने चले आ रहे ऋण इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से परिवार में सदस्य संख्या में वृद्धि होगी। यह वृद्धि विवाह या जन्म के माध्यम से हो सकती है। आपके परिवार में एक दूसरे के प्रति समर्पण की भावना होने से सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा।

भाईयों का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 14 मई के बाद आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे और सामाजिक उत्थान के लिए कोई संस्था का संचालन भी कर सकते हैं।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल है। द्वितीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके बच्चों की उन्नति होगा। 14 मई के बाद दूसरी संतान के लिए समय बहुत उत्तम है।

यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं। तो गर्भाधान का सुन्दर समय चल रहा है। यदि आपका दूसरा बच्चा विवाह के योग्य है तो विवाह हो जाएगा। इस समय के अंतराल में बच्चों के साथ भावनात्मक लगाव बढ़ेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। शारीरिक ऊर्जा व कार्य क्षमता में वृद्धि होगी। पूर्ण रूप से शारीरिक आरोग्यता बनी रहेगी परन्तु 29 मार्च के बाद द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप छोटी-मोटी बीमारियों के कारण परेशान हो सकते हैं।

समय का सदुपयोग कर अपनी जीवनशैली को बेहतर बनाने की कोशिश करें। किसी आर्थिक मुद्दे को लेकर या किसी विरोधी के कारण दिमागी तनाव न पालें। चिड़-चिड़े न बनें अन्यथा इन सबका आपकी सेहत पर नकारात्मक प्रभाव पड़ेगा।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ अच्छा रहेगा, षष्ठ स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आप प्रतियोगिता परीक्षा में सबसे आगे रहेंगे। कुछ अनुभवी व्यक्तियों से मिलकर आप अपनी कार्यशैली में सुधार करेंगे। सरकारी अफसरों और वरिष्ठ लोगों का सहयोग प्राप्त होगा, जिससे आपको कार्यों में लाभ प्राप्त हो सकता है।

29 मार्च से समय बहुत शुभ हो रहा है। षष्ठ स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से बेरोजगार लोगों को रोजगार मिलने का प्रबल योग बन रहा है। गुरु के गोचर के बाद सफलता प्राप्ति के लिए आपको अधिक मेहनत करनी पड़ेगी।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादश स्थान के राहु विदेश यात्रा के प्रबल योग बना रहे हैं। 14 मई के बाद तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपकी छोटी-मोटी यात्राओं के साथ लम्बी यात्राएं भी होती रहेंगी।

यात्रा के दौरान या वाहनादि चलाते समय सावधानी बहुत जरूरी है, क्योंकि 29 मार्च के बाद शनि ग्रह का गोचर अनुकूल नहीं रहेगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल रहेगा। ईश्वर के प्रति आपके मन में अटूट विश्वास बना रहेगा। 14 मई के बाद नवम स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आप कोई विशेष पूजा-पाठ, यज्ञ, अनुष्ठान आदि सम्पन्न करेंगे एवं तीर्थ यात्रा कर

पुण्यार्जन भी करेंगे।

- शनिवार के दिन सुबह-सुबह पीपल के वृक्ष को जल चढ़ाएं एवं सन्ध्या के समय चौमुखी दीपक जलाएं।
- बुधवार के दिन गणेशजी को दूर्वा चढ़ाएं एवं ॐ गं गणपतये नमः मन्त्र का पाठ करें।
- नित्य प्रति हनुमान चालीस का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



एक्स-35, ओखला फेज-2, नई दिल्ली-110020 फोन:- 011-40541000, 40541020
Web: www.futurepointindia.com, e-mail: mail@futurepointindia.com

वार्षिक फलादेश - 2026

इस वर्ष मीन राशि के शनि द्वादशभाव में रहेंगे। 25 नवम्बर तक कुम्भ राशि के राहु एकादश भाव में रहेंगे और उसके बाद मकर राशि में दशम भाव में गोचर करेंगे। वर्ष के पूर्वार्द्ध में मिथुन राशि के गुरु तृतीय भाव में रहेंगे और 2 जून को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में गोचर करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 31 अक्टूबर को सिंह राशि में पंचम भाव में प्रवेश कर जाएंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपने सरल गति से गोचर करेंगे। वर्षारम्भ से 1 फरवरी तक शुक्र अस्त रहेंगे और अक्टूबर में भी 14 दिन के लिए अस्त होंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध शुभ फलदायी नहीं रहेगा। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार अथक प्रयास करना पड़ेगा। उसके बाद भी बहुत ज्यादा सफलता प्राप्त नहीं होगी। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ नहीं करना चाहिए। पुराने चले आ रहे कार्यों को और अच्छे ढंग से चलाना चाहिए। 02 जून के बाद नौकरी करने वाले व्यक्तियों के लिए समय कुछ अच्छा हो रहा है। उनको अपने अधिकारियों से लाभ प्राप्त हो सकता है। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपका स्थानान्तरण भी अनुकूल स्थान पर हो सकता है।

31 अक्टूबर के बाद गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उस समय आपको व्यापार में कुछ सफलता मिल सकती है। नवम स्थान पर गुरु एवं शनि के संयुक्त दृष्टि प्रभाव से आपका भाग्य साथ देगा। जिसके कारण बड़े अधिकारी या अनुभवी लोगों का सहयोग प्राप्त होगा जिसके फलस्वरूप आप कार्य व्यवसाय में कुछ विशेष करेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। एकादश स्थान के राहु धनागम कराते रहेंगे। परन्तु द्वादश स्थान के शनि अनुकूल नहीं होने के कारण आपकी आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ नहीं होने देंगे। अचानक कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपका बजट बिगड़ सकता है। शारीरिक व्याधियां दूर करने में भी आपका पैसा खर्च हो सकता है।

2 जून के बाद समय कुछ अनुकूल हो रहा है। जिसके प्रभाव से आपको भूमि, भवन, वाहन इत्यादि का सुख प्राप्त होने की संभावना बन रही है। 31 अक्टूबर को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में होगा। उस समय आप अपने बच्चे की शिक्षा पर धन खर्च करेंगे।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध उत्तम नहीं रहेगा। द्वितीय स्थान पर शनि की दृष्टि पारिवारिक माहौल के लिए अच्छा योग नहीं बना रही है। आपके परिवार में एक दूसरे के प्रति परस्पर सहयोग की भावना में कमी आ सकती है। सामाजिक रूप से समय अच्छा रहेगा। तृतीयस्थ गुरु के प्रभाव से आपके पराक्रम तथा कार्य क्षमताओं का विकास होगा।

सामाजिक गतिविधियों में आप बढ़-चढ़ कर भाग लेंगे जिससे आपकी सामाजिक प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी।

02 जून से चतुर्थ स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपका घरेलू वातावरण अनुकूल होगा। परिवार में एक दूसरे के प्रति भावनात्मक लगाव बढ़ेगा, जिसके फलस्वरूप परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। आपको परिवार का सहयोग प्राप्त होगा। ससुराल पक्ष से संबंध मधुर होंगे। आपको मित्रों का भी पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। 31 अक्टूबर के बाद संतान पक्ष के लिए समय अनुकूल हो रहा है।

संतान

संतान की दृष्टि से यह वर्ष सामान्य रहेगा। पंचमस्थ केतु के प्रभाव से संतान संबंधित चिन्ताएं बनी रहेंगी। उनकी शिक्षा-दीक्षा में भी व्यवधान आ सकता है। लक्ष्य प्राप्ति हेतु लगातार परिश्रम करना पड़ेगा।

आपके दूसरे बच्चे के लिए वर्ष का पूर्वार्द्ध बहुत अच्छा है। यदि वे उच्च शिक्षा प्राप्त करना चाहता है तो अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। यदि वह विवाह के योग्य है तो विवाह भी हो सकता है। 31 अक्टूबर को गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। यह समय गर्भाधान के लिए बहुत अच्छा रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से यह वर्ष मिला-जुला रहेगा। द्वादशस्थ शनि के कारण आपके स्वास्थ्य में उतार चढ़ाव की स्थिति बनी रहेगी। मौसमजनित बीमारियों के कारण आप अस्वस्थ रह सकते हैं। यदि पहले से कोई बीमारी है तो परहेज की ज्यादा जरूरत है नहीं तो आपके स्वास्थ्य में गिरावट आ सकती है। बेहतर होगा कि आप अपने दैनिक जीवन में अनुशासित भोजन अपनायें व लापरवाही न करें। किसी भी मुद्दे को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें। सुबह जल्दी उठकर घूमना या व्यायाम करना आपके लिए लाभप्रद रहेगा।

31 अक्टूबर के बाद समय अनुकूल हो रहा है। उस समय लग्न स्थान पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति विकसित होगी जिससे आपकी स्वास्थ्य संबंधित परेशानियां दूर होना शुरू हो जाएंगी और आप पूर्ण रूप से स्वस्थ रहेंगे।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा। आप अपने परिश्रम के बल पर अपने लक्ष्य को प्राप्त करेंगे। प्रतियोगिता परीक्षा में सफलता प्राप्ति के लिए आपको अथक प्रयास करना पड़ेगा। विद्यार्थियों की अध्ययन के प्रति रुचि बढ़ेगी परन्तु आलस्य की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है।

जिन जातकों को अभी तक नौकरी नहीं मिली है। उनको कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है। 31 अक्टूबर के बाद विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा रहेगा।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अच्छा रहेगा। वर्षारम्भ में तृतीय स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से छोटी मोटी यात्राओं के साथ-साथ लम्बी यात्राएं भी होंगी।

02 जून के बाद घर से दूर रहने वाले व्यक्तियों की अपनी जन्म भूमि की यात्रा हो सकती है। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह के दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

धर्म कार्य एवं ग्रह शान्ति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अनुकूल है। गुरु ग्रह के गोचर के बाद यन्त्र, मन्त्र, तन्त्र के प्रति आप का विश्वास बढ़ सकता है और घरेलू सुख, शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए हवन, ग्रह शान्ति या अन्य कोई पूजा संपन्न करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें अथवा काला कम्बल गरीबों को दान करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2027

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मीनस्थ शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 3 जून को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर 03 अक्टूबर को फिर से मीन राशि एवं द्वादश में आजाएंगे। मकर राशि के राहु दशम भाव में करेंगे। वक्री गुरु 25 जनवरी को कर्क राशि एवं चतुर्थ भाव में प्रवेश करेंगे और मार्गी होकर 26 जून को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से अतिचारी होकर 26 नवम्बर को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश कर जाएंगे। 26 अप्रैल से 5 जुलाई तक मंगल वक्री होकर सिंह राशि एवं पंचम भाव में रहेंगे। 21 जुलाई से 7 सितम्बर तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

कार्य व्यवसाय की दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से आप लापरवाह, आलसी व बीमार हो सकते हैं जिसके कारण आपका कार्य व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। दशमस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ ऐसे कार्य मिल सकते हैं जिससे आपको किंचित लाभ प्राप्त हो सकता है। नौकरी करने वाले व्यक्तियों की अचानक पदोन्नति या स्थानान्तरण होने की संभावना है।

26 जून के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल हो रहा है। उस समय आपको कुछ आय के स्रोत मिल सकते हैं। शेयर मार्केट व सट्टा आदि के कार्यों से आप लाभान्वित हो सकते हैं। अपनी कार्य कुशलता, दक्षता एवं बौद्धिक बल पर आप अपनी समस्याओं का समाधान भी निकाल लेंगे परन्तु 26 नवम्बर के बाद गुरु एवं शनि का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आप के कार्य क्षेत्र में कुछ विरोधी भी उत्पन्न होंगे, जो आपकी उन्नति में अवरोध उत्पन्न कर सकते हैं। अतः उस समय के अंतराल में आपको बिना किसी पर विश्वास किये अपना कार्य करते रहना होगा।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का पूर्वार्द्ध अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान केशनि आर्थिक मामलों में उतार-चढ़ाव की स्थिति बनाए रखेंगे जिसके फलस्वरूप आप इच्छित बचत नहीं कर पाएंगे। कोई बड़ा आर्थिक निर्णय लेने से पहले उस क्षेत्र से जुड़े अनुभवी लोगों की सलाह अवश्य लें। जोखिम भरे कार्यों से बचें एवं निवेश के मामले में सावधान रहें। पैसा कमाने के लिए शॉर्ट-कट न अपनाए नहीं तो नुकसान हो सकता है।

26 जून के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धनागम का योग बन रहा है जिससे आपकी आर्थिक स्थिति में कुछ सुधार होना शुरु हो जाएगा। दशमस्थ राहु के प्रभाव से अचानक कुछ पैसे मिल सकते हैं, जिससे आपको छोटे-मोटे कर्जों से मुक्ति मिल सकती है। घर परिवार में मांगलिक कार्य सम्पन्न होंगे, जिसमें भी आपका धन खर्च हो सकता है। 26 नवम्बर के बाद समय ज्यादा प्रतिकूल हो रहा है। इस समय के अंतराल में कोई बड़ा निवेश न करें या किसी को उधार पैसे न दें।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में आपका पारिवारिक वातावरण अच्छा रहेगा। परिवार में एक-दूसरे प्रति भावनात्मक लगाव बना रहेगा। सब लोगों के अंदर परस्पर सहयोग की भावना बनी रहेगी। माता का पूर्ण सहयोग प्राप्त होगा। चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आपके परिवार में सुख, शान्ति, समृद्धि एवं पारिवारिक उन्नति होती रहेगी। दशमस्थ राहु के प्रभाव से आपके पिता का स्वास्थ्य प्रभावित रहेगा।

गुरु ग्रह के गोचर के बाद आपके परिवार में मांगलिक कार्य संपन्न होंगे। आपके बच्चों के साथ आपका समन्वय मधुर होगा। आपको भाईयों का सहयोग प्राप्त होगा। समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी। 26 नवम्बर के बाद पारिवारिक एवं सामाजिक दोनों पक्षों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा, उस समय भी आप अपने बौद्धिक बल से घरेलू वातावरण को अनुकूल करने की नाकाम कोशिश करेंगे।

संतान

संतान के दृष्टिकोण से वर्ष का पूर्वार्द्ध सामान्य रहेगा। आपके बच्चे को सफलता प्राप्ति के लिए अधिक परिश्रम करने की आवश्यकता है। शिक्षा के प्रति सन्तान की रुचि बनी रहेगी परन्तु आलस्य की भावना उनकी पढ़ाई में व्यवधान उत्पन्न कर सकती है।

26 जून से गुरु ग्रह का गोचर पंचम स्थान में हो रहा है। उसके बाद समय काफी अनुकूल हो जाएगा। संतान के इच्छुक दम्पतियों के लिए गर्भाधान का शुभ समय है। यह समय आपके बच्चों के लिए भी अच्छा है। वे आसानी से अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सफल होंगे। विवाह योग्य सन्तान का विवाह हो सकता है। आपके दूसरे बच्चे के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य के दृष्टिकोण से यह वर्ष अनुकूल नहीं रहेगा। द्वादश स्थान का शनि आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकता है। आर्थिक स्थिति को लेकर आवश्यकता से अधिक चिंता न करें। मौसम जनित बीमारियों से भी आप परेशान हो सकते हैं। नियमित व्यायाम एवं संतुलित आहार लाभप्रद रहेगा।

26 जून के बाद आपका समय कुछ अनुकूल हो रहा है। लग्न स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आप के अंदर रोग प्रतिरोधक शक्ति का संचार होगा, जिससे आप मानसिक रूप से सन्तुष्ट एवं शारीरिक रूप से स्वस्थ रहेंगे। स्वास्थ्य को अनुकूल रखने के लिए शाकाहारी भोजन एवं योगासन के साथ-साथ व्यायाम भी करते रहें। 26 नवम्बर के बाद समय फिर से प्रभावित हो सकता है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में बैठने जा रहे हैं तो सफलता प्राप्ति के लिए

आपको अधिक परिश्रम की आवश्यकता होगी। अध्ययन के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी परन्तु अस्थिरता की भावना सफलता में बाधक साबित हो सकती है। आपको संघर्षात्मक परिस्थितियों में सफलता मिलेगी।

विद्यार्थियों के लिए 26 जून के बाद समय शुभ हो रहा है। उस समय आपको उचित सफलता प्राप्त होगी। उच्च शिक्षा प्राप्ति के लिए आपका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो सकता है। बेरोजगार जातकों को रोजगार हेतु और इन्तजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

यात्रा की दृष्टि से यह वर्ष अनुकूल रहेगा। द्वादशस्थ शनिपर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी विदेश यात्रा होने के प्रबल योग बन रहे हैं।

वर्ष के पूर्वार्द्ध में चतुर्थस्थ गुरु के प्रभाव से आप परिवार सहित अपने जन्म स्थल की यात्रा करेंगे। छोटी-मोटी यात्राएं तो होती रहेंगी साथ ही 02 जून के बाद आपकी लम्बी यात्राएं भी होंगी। धार्मिक यात्रा कर पुण्यार्जन भी करेंगे।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

धार्मिक कार्य के लिए यह वर्ष अत्यधिक अनुकूल रहेगा। वर्ष के पूर्वार्द्ध में पारिवारिक सुख शान्ति एवं समृद्धि प्राप्ति के लिए अपने घर में हवन पूजा इत्यादि शुभ कर्म करेंगे। द्वादशस्थ शनि पर गुरु ग्रह की दृष्टि से दान, पुण्य, भण्डारा इत्यादि भी करेंगे। 26 जून के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से ईश्वर के प्रति आपका श्रद्धा एवं विश्वास बढ़ेगा, जिससे आध्यात्मिक ज्ञान के प्रति आपकी रुचि बढ़ेगी और आप अध्यात्मिक शक्ति को प्रबल करने के लिए मन्त्र, पाठ एवं यज्ञ अनुष्ठान इत्यादि शुभ कार्य करेंगे।

- प्रत्येक दिन सूर्य को जल दें।
- मंगलवार के दिन हनुमान जी को चोला चढ़ाएं।
- प्रत्येक दिन हनुमान चालीसा का पाठ करें एवं शनिवार को काली वस्तु का दान करें।
- वीरवार के दिन पीली वस्तु का दान करें। बड़े-बुजुर्गों की सेवा करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2028

वर्षारम्भ में मीन राशि के शनि द्वादश भाव में रहेंगे और 23 फरवरी को मेष राशि एवं लग्न स्थान में प्रवेश करेंगे। राहु वर्ष के शुरु में मकर राशि एवं दशम भाव में रहेंगे और 24 मई को धनु राशि एवं नवम भाव में प्रवेश करेंगे। वर्षारम्भ में कन्या राशि के गुरु छठे भाव में रहेंगे और वक्री होकर 28 फरवरी को सिंह राशि एवं पंचम भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गी होकर 24 जुलाई को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे। इस वर्ष मंगल ग्रह अपनी सरल गति से गोचर करेंगे। 28 मई से 6 जून तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्षारम्भ में कार्य व्यवसाय की स्थिति अच्छी नहीं रहेगी। व्यापार में सफलता प्राप्ति के लिए अत्यधिक परिश्रम करना पड़ेगा। शनि एवं गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण व्यवसाय में हानि भी हो सकती है। अतः इस समय के अंतराल में कोई नया कार्य प्रारम्भ न करें। द्वादशस्थ शनि के कारण आलस्य बना रहेगा जिससे व्यवसाय प्रभावित हो सकता है। 28 फरवरी के बाद गुरु ग्रह का गोचर अनुकूल होने स्थिति में कुछ सुधार होगा। नौकरी के लिए यह समय सामान्य रहेगा।

24 जुलाई के बाद षष्ठस्थ गुरु एवं लग्नस्थ शनि के प्रभाव से व्यवसाय में उतार-चढ़ाव का योग बन रहा है। अतः इस समय के अंतराल में आत्मविश्वास बनाए रखें। यदि आप साझेदारी में व्यवसाय कर रहे हैं तो इच्छित लाभ नहीं मिलेगा एवं आप अपने साझेदार से भी असंतुष्ट रहेंगे।

धन संपत्ति

आर्थिक दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ सामान्य रहेगा। शनि एवं गुरु का गोचर अनुकूल नहीं होने के कारण आय के स्रोत प्रभावित होंगे परन्तु 28 फरवरी के बाद एकादश स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से धन लाभ होगा। बड़े भाई या पिता से भी धन लाभ हो सकता है। रुके या फंसे हुए पैसे भी मिल सकते हैं। कर्ज इत्यादि से मुक्ति मिल सकती है।

24 जुलाई के बाद फिर से कुछ ऐसे खर्च आ जाएंगे जिससे आपकी आर्थिक स्थिति कमजोर हो सकती है अतः इस बात को ध्यान में रखते हुए अभी से पैसा बचाना शुरु कर दें। जोखिम भरे कार्य में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें क्योंकि वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर भी अंकुश लगाएं।

घर-परिवार, समाज

पारिवारिक दृष्टि से वर्षारम्भ मिला-जुला रहेगा। द्वितीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से पारिवारिक अनुकूलता बनी रहेगी। परिवार के सदस्य एक दूसरे का सहयोग करेंगे। परिवार में सुख शान्ति का वातावरण बना रहेगा। मातुल पक्ष के लोगों के साथ आपका संबंध अच्छा नहीं रहेगा। 28 फरवरी के बाद पुत्र व बड़े भाईयों का सहयोग

मिलेगा। गर्भाधान के लिए अच्छा समय है।

24 जुलाई के बाद सप्तम स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से पत्नी के साथ वैचारिक मतभेद हो सकते हैं जिसका नकारात्मक प्रभाव आपके परिवार पर पड़ेगा। पारिवारिक अनुकूलता भी भंग हो सकती है। उस समय अपने विवेक से काम लें। सामाजिक पद प्रतिष्ठा के लिए यह वर्ष सामान्य रहेगा।

संतान

संतान के लिए वर्ष का प्रारम्भ अनुकूल नहीं रहेगा। वर्ष के शुरुआत में ही स्वास्थ्य संबंधित परेशानी आ सकती हैं। आप मानसिक रूप से चिंतित रह सकते हैं परन्तु 28 जुलाई के बाद पंचम स्थान पर गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से आपके बच्चों की शिक्षा के प्रति रुचि बढ़ेगी। उनका अच्छे शैक्षणिक संस्थान में प्रवेश हो जाएगा। संतान की इच्छा रखने वाले व्यक्तियों के लिए समय काफी अनुकूल है। यदि आपके बच्चे विवाह के योग्य हैं तो उनका विवाह हो जायेगा।

24 जुलाई के बाद संतान की शिक्षा-दीक्षा या उन्नति में व्यवधान आ सकता है अतः मन को एकाग्र कर शिक्षा पर विशेष ध्यान देना चाहिए। आपके दूसरे बच्चे के लिए समय शुभ नहीं है। उसके खान पान पर ध्यान दें नहीं तो स्वास्थ्य ज्यादा प्रभावित हो सकता है।

स्वास्थ्य

स्वास्थ्य की दृष्टि से वर्ष का प्रारम्भ अच्छा नहीं रहेगा। कुछ न कुछ परेशानियां होती रहेंगी। यदि पहले से किसी लम्बी बीमारी से ग्रसित हैं तो यह वर्ष स्वास्थ्य की दृष्टि से अच्छा नहीं है। षष्ठस्थ गुरु के प्रभाव से पेट संबंधित परेशानी हो सकती है। घी व तली हुई वस्तुओं का सेवन कम करें। 28 फरवरी के बाद स्वास्थ्य में कुछ सुधार होगा। सकारात्मक ऊर्जा में वृद्धि होगी। रोग प्रतिरोधक शक्ति बढ़ेगी।

24 जुलाई के बाद गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल होने के कारण आपका स्वास्थ्य प्रभावित हो सकता है। लग्नस्थ शनि एवं छठे स्थान के गुरु आपके स्वास्थ्य को प्रभावित कर सकते हैं। मौसमजनित बीमारियों से परेशान रह सकते हैं। कभी-कभी बीमार नहीं होने के बावजूद भी बीमारी जैसा अनुभव करेंगे। शारीरिक व्याधियों को दूर करने के लिए अन्न दान भी कर सकते हैं।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ सामान्यतः ठीक-ठाक रहेगा परन्तु विद्यार्थियों के लिए समय अच्छा नहीं रहेगा। वर्षारम्भ में शिक्षा में व्यवधान आता रहेगा परन्तु 28 फरवरी के बाद पंचमस्थ गुरु के प्रभाव से समय काफी अनुकूल होगा। व्यवसायिक या तकनीकी शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए यह समय अच्छा रहेगा।

24 जुलाई के बाद समय फिर से प्रभावित हो रहा है। प्रतियोगिता परीक्षार्थियों को

अपने लक्ष्य में सफलता प्राप्ति के लिए लगातार प्रयास करना पड़ेगा। बेरोजगारों जातकों को रोजगार हेतु कुछ दिन और इंतजार करना पड़ सकता है।

यात्रा-तबादला

द्वादशस्थ शनि के प्रभाव से वर्षारम्भ में ही आपकी विदेश यात्राएं होंगी। 28 फरवरी के बाद नवम स्थान पर गुरु ग्रह की दृष्टि प्रभाव से आपकी लम्बी यात्राएं होंगी। धार्मिक या तीर्थ यात्रा का भी योग बन रहा है।

24 जुलाई के बाद अचानक यात्राएं हो सकती हैं। यात्रा के दौरान सावधानी बहुत जरूरी है। शनि ग्रह का गोचर शारीरिक कष्ट दे सकता है।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

मानसिक द्वन्दता के कारण वर्षारम्भ में पूजा-पाठ दान पुण्य कम ही कर पाएंगे। 28 फरवरी के बाद पंचम स्थान में गुरु ग्रह के गोचरीय प्रभाव से धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी। मन्त्र जाप या साधना (ध्यान) करेंगे। गुरु के दिये गये उपदेशों का पालन करेंगे।

- माता-पिता, गुरु, साधू, सन्यासी और अपने से बड़े लोगों का आशीर्वाद प्राप्त करें।
- मंदिर या धार्मिक स्थानों पर केला या बेसन के लड्डू वितरित करें।
- शनिवार के दिन काला कम्बल गरीबों को दान करें। या शनि मन्त्र का जाप करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



वार्षिक फलादेश - 2029

वर्ष के पूर्वार्द्ध में मेष राशि के शनि लग्न स्थान में रहेंगे और 08 अगस्त को वृष राशि एवं द्वितीय भाव में प्रवेश करेंगे और वक्री होकर फिर से 05 अक्टूबर को मेष राशि एवं लग्न स्थान में आ जाएंगे। धनु राशि के राहु नवम भाव में रहेंगे। वर्षारम्भ में तुला राशि के गुरु सप्तम भाव में रहेंगे और वक्री होकर 29 मार्च को कन्या राशि एवं छठे भाव में प्रवेश करेंगे और फिर से मार्गशीर्ष होकर 25 अगस्त को तुला राशि एवं सप्तम भाव में आ जाएंगे। वक्री मंगल 27 जुलाई तक कन्या राशि एवं छठे भाव में रहेंगे। 15 फरवरी से 16 अप्रैल तक शुक्र अस्त रहेंगे।

व्यवसाय

वर्ष का प्रारम्भ कार्य व्यवसाय के लिए बहुत उत्तम रहेगा। आपके आत्मविश्वास में वृद्धि होगी। किसी नये कार्य में भाग्य आजमा सकते हैं। अचानक बहुत ज्यादा लाभ मिलेगा। कुछ प्रतिस्पर्धी अड़चनें पैदा करने की कोशिश करेंगे परन्तु षष्ठस्थ मंगल के कारण आप उन पर नियन्त्रण पा लेंगे। मार्च से अगस्त तक समय किंचित प्रभावित होगा। उस समय आपको धोखा मिल सकता है।

05 अक्टूबर से आपका समय फिर से अनुकूल हो रहा है। व्यापारिक व्यक्तियों के आय के स्रोत खुलेंगे। उच्च अधिकारियों या बड़े लोगों का भरपूर सहयोग मिलेगा जिससे आप कार्यों में बहुत उन्नति करेंगे। काम-काज में पत्नी का अच्छा सहयोग मिलेगा।

धन संपत्ति

वर्ष के प्रारम्भ में आर्थिक उन्नति होगी। इच्छित बचत करने में सफल रहेंगे। आय के मार्ग प्रशस्त होंगे। 29 मार्च के बाद शारीरिक व्याधि दूर करने में आपका व्यय होगा। क्योंकि गुरु ग्रह का गोचर प्रतिकूल हो रहा है। जोखिम भरे कार्यों में निवेश करने से बचें अन्यथा हानि हो सकती है। किसी को उधार पैसा न दें नहीं तो वापसी की उम्मीद कम है। अपने खर्च पर अंकुश लगाएं नहीं तो अनावश्यक खर्च बढ़ सकता है।

25 अगस्त से गुरु का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। रुके हुए या फंसे हुए पैसे मिलेंगे। आय के सारे मार्ग खुलेंगे। परिवार में किसी सदस्य के स्वास्थ्य पर भी आपका धन व्यय होगा।

घर-परिवार, समाज

वर्ष का प्रारम्भ पारिवारिक रूप से उत्तम रहेगा। घर परिवार में शान्ति का वातावरण बना रहेगा। सप्तमस्थ गुरु के प्रभाव से अविवाहित व्यक्तियों का विवाह होगा जिससे परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। भाई-बहन सहित पूरे परिवार का सहयोग आपको मिलता रहेगा। पत्नी के साथ आपके संबंध मधुर होंगे। तृतीय स्थान पर गुरु एवं शनि ग्रह की संयुक्त दृष्टि प्रभाव से समाज में आपकी पद प्रतिष्ठा में बढ़ोत्तरी होगी। मार्च के बाद आपका मातुल पक्ष के लोगों के साथ संबंध खराब हो सकते हैं।

08 अगस्त के बाद द्वितीयस्थ शनि के प्रभाव से आपकी पारिवारिक अनुकूलता भंग हो सकती है परन्तु आप अपने बौद्धिक बल के द्वारा उसे भी अनुकूल बना लेंगे। 05 अक्टूबर के बाद इष्ट, मित्र व पत्नी के साथ आपके संबंध अच्छे होंगे। परिवार में फिर से शान्ति का वातावरण बनेगा जिसमें आपकी पत्नी की अहम भूमिका होगी।

संतान

वर्ष का प्रारम्भ आपके बच्चे के लिए शुभ रहेगा। आपकी संतान की उन्नति होगी। प्रथम संतान के विषय में शुभ समाचार प्राप्त होंगे। शिक्षा के क्षेत्र में भी प्रगति करेंगे परन्तु पंचम भाव पर राहु ग्रह की दृष्टि के कारण आपकी प्रथम संतान को स्वास्थ्य संबंधित परेशानी बनी रहेगी।

यदि आप दूसरे बच्चे की इच्छा रखते हैं तो गर्भधान के लिए उत्तम समय है। आपका दूसरा बच्चा विवाह के है तो उसका विवाह भी हो सकता है। 29 मार्च से 25 अगस्त तक समय प्रभावित रहेगा। उसके बाद फिर अच्छा हो जाएगा।

स्वास्थ्य

वर्ष का प्रारम्भ स्वास्थ्य के लिए उत्तम है। लग्न स्थान पर शनि एवं गुरु ग्रह के संयुक्त गोचरीय प्रभाव से आपके अंदर रोग प्रतिरोधक क्षमता विकसित होगी परन्तु लग्न स्थान का शनि आपको आलसी बना सकता है। 29 मार्च के बाद मौसमजनित बीमारियों से किंचित परेशान हो सकते हैं।

25 अगस्त के बाद आपका स्वास्थ्य अनुकूल बना रहेगा। लग्न पर गुरु की दृष्टि होने से आप प्रत्येक कार्य को सकारात्मक रूप से करेंगे। अच्छे स्वास्थ्य के लिए आपका खान-पान एवं दिनचर्या भी सुधरेगी। आपके अंदर शारीरिक आरोग्यता एवं मानसिक शान्ति बनी रहेगी। 05 अक्टूबर के बाद समय काफी अच्छा हो रहा है।

करियर एवं प्रतियोगी परीक्षा

प्रतियोगिता परीक्षा के लिए वर्ष का प्रारम्भ उत्तम रहेगा। अचानक आपको सफलता मिलेगी। व्यवसायिक शिक्षा प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों के लिए समय बहुत अच्छा रहेगा। उनको अपने लक्ष्य में सफलता मिलेगी। 29 मार्च के बाद समय कुछ प्रतिकूल हो रहा है। उस समय अपने मन को एकाग्र कर लक्ष्य के प्रति केन्द्रित करें।

गुरु ग्रह का गोचर 25 अगस्त को फिर से अनुकूल हो रहा है। यदि आप किसी प्रतियोगिता परीक्षा में भाग लेना चाह रहे हैं तो उसके लिए समय अनुकूल है, उसमें आपको सफलता मिलेगी।

यात्रा-तबादला

वर्ष के प्रारम्भ में नवमस्थ राहु के कारण लम्बी यात्राओं के साथ-साथ छोटी यात्राएं भी होती रहेंगी। 29 मार्च के बाद विदेश यात्राएं होंगी।

08 अगस्त के बाद चतुर्थ स्थान पर शनि ग्रह की दृष्टि प्रभाव से नौकरी करने वाले व्यक्तियों का स्थानान्तरण होगा। यह स्थानान्तरण आपके अनुकूल स्थान पर नहीं होगा।

धर्म कार्य एवं ग्रह शांति

वर्ष के प्रारम्भ में नवमस्थ राहु के कारण पूजा पाठ में आपका मन कम ही लगेगा। 29 मार्च के बाद आपका समय और ज्यादा प्रभाविता हो रहा है। 25 अगस्त से गुरु ग्रह का गोचर फिर से अनुकूल हो रहा है। आप अपनी पत्नी के साथ पारिवारिक कल्याण के लिए कोई विशेष पूजा संपन्न करेंगे।

- बेसन के लड्डू वीरवार के दिन विष्णु जी के मन्दिर में वितरित करें एवं गुरु ग्रह के मन्त्र का पाठ करें।
- प्रत्येक दिन सूर्योदय के समय सूर्य को जल दें।
- शनिवार के दिन काली वस्तु का दान करें व शनि मन्त्र का पाठ करें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



दशा विश्लेषण

महादशा :- केतु
(19/03/2023 - 19/03/2030)

केतु की महादशा 19/03/2023 को आरम्भ और 19/03/2030 को समाप्त होगी। इसकी अवधि 7 वर्ष है। आपकी जन्मकुण्डली में केतु सप्तम भाव में है जहाँ से इसकी दृष्टि लग्न पर है। इसके पूर्व आपकी बुध की दशा चल रही थी जिसकी दशा 17 वर्ष थी। बुध के कारण आपको सम्पत्ति, समृद्धि, यश और ख्याति की प्राप्ति और लम्बी यात्रा हुई होगी। केतु की वर्तमान दशा में यात्रा, व्यापार में वृद्धि और साझेदारों से लाभ होगा।

स्वास्थ्य :

इस दशा के दौरान आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। आप शक्ति शाली तथा स्फूर्तिवान होंगे। आपको विषाणुजन्य बुखार, चर्मरोग, छूत की बीमारी, फोड़ा, जनन तथा मूत्राशय संबंधी समस्या हो सकती है। कुछ उपायकर इनसे बचा जा सकता है।

अर्थ और व्यवसाय :

इस दशा के दौरान आपकी आर्थिक स्थिति अच्छी होगी। आपको साझेदारों तथा व्यवसाय से लाभ होगा। सट्टे तथा निवेश में लाभ होगा। आपको कार्य में सफलता तथा यश और ख्याति मिलेगी। जीविका-व्यवसाय के लिए उद्योग, इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर प्रौद्योगिकी, धातु अथवा खनिज प्रौद्योगिकी अथवा हाईवेयर निर्माण अथवा कृषि का चयन कर सकते हैं। रत्न, धातु, चमड़े, मशीनरी लोहा और इस्पात, हाईवेयर, खेल-सामग्री आदि का व्यापार लाभदायक होगा। नौकरीपेशा लोगों को लाभ, आय में वृद्धि तथा सम्मान की प्राप्ति होगी। व्यापार-व्यवसाय से जुड़े लोगों को यश, ख्याति, आदर, सफलता तथा जीवन में प्रगति होगी। यह दशा व्यवसाय में उन्नति के लिए उत्तम है।

वाहन, यात्रा, जायदाद :

शनि की अन्तर्दशा में आपको सभी सुख मिलेंगे। जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी। आप एक मकान खरीद सकते हैं। सम्पत्ति के लेन-देन के लिए यह दशा उत्तम है। गुरु की अन्तर्दशा में आपकी छोटी किन्तु, लाभदायक और बुध की अन्तर्दशा में लम्बी यात्रा होगी।

शिक्षा :

आपकी शिक्षा उत्तम होगी। आपको अपना स्तर बनाए रखने के लिए कठिन परिश्रम करना होगा। गणित, इंजीनियरिंग, कम्प्यूटर विज्ञान, भाषा, मेकैनिक्ल इंजीनियरिंग, प्रशासन और योजना में आपकी रुचि हो सकती है। आप साहसी और आत्मविश्वासी हैं और खेल तथा शिक्षा, अन्य गतिविधियों में अच्छा करेंगे।

परिवार :

परिवार के साथ आपका संबंध मधुर रहेगा। आपके बच्चों को कठिन परिश्रम करना होगा और उनकी छोटी यात्रा होगी। उन्हें आपकी सहायता और मार्गदर्शन की जरूरत होगी।



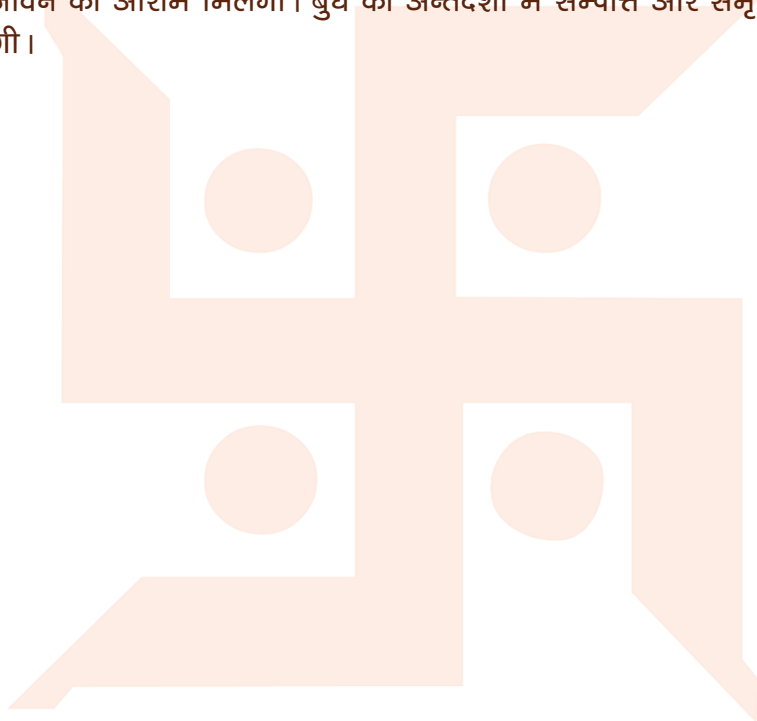
FUTUREPOINT
Astro Solutions



आपके जीवन साथी को यश, ख्याति और धर्म में रुचि होगी। अपने जीवन साथी के साथ आपका संबंध उत्तम रहेगा। आपकी माता की जमीन-जायदाद में वृद्धि होगी और सफलता मिलेगी जबकि पिता को लाभ, विभिन्न स्रोतों से आय और इच्छाओं की पूर्ति होगी। आपके छोटे भाई-बहनों को सट्टे में लाभ और शिक्षा उत्तम होगी। बड़ों की यात्रा होगी और धन तथा समृद्धि की प्राप्ति होगी।

अन्तर्दशा :

केतु की महादशा में केतु की अन्तर्दशा के दौरान आपकी यात्रा और व्यापार में वृद्धि होगी और सफलता मिलेगी। शुक्र के कारण आपको लाभ मिलेगा और मनोकामनाओं की पूर्ति होगी जबकि चन्द्र की अन्तर्दशा में प्रगति होगी, व्यवसाय में सफलता और लाभ मिलेगा। राहु कुछ बाधा खड़ी कर सकता है। गुरु की अन्तर्दशा के दौरान शत्रु के कारण कुछ समस्या, स्वास्थ्य संबंधी मामूली समस्या और छोटी यात्रा होगी जबकि योगकारक शनि के कारण बच्चों से सुख, सफलता और जीवन का आराम मिलेगा। बुध की अन्तर्दशा में सम्पत्ति और समृद्धि मिलेगी तथा लम्बी यात्रा होगी।



FUTUREPOINT
Astro Solutions



अंतर्दशा :- केतु - सूर्य
(14/10/2024 - 19/02/2025)

आपके लिए केतु महादशा 19/03/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सूर्य की अंतर्दशा की अवधि 4 मास 6 दिन होगी जो आपके लिए 14/10/2024 को प्रारंभ होकर 19/02/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी सूर्य पिता, स्वास्थ्य, ऊर्जा, कार्यक्षमता और आत्मा का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे, उच्च पद पर आसीन हो सकते हैं। स्पर्धियों और शत्रुओं से मुकाबला करना पड़ सकता है। कार्यों में सफलता मिलेगी; प्रसन्नचित्त रहेंगे। सहकर्मी और अधीनस्थ कर्मचारी सहयोग करेंगे। किराये से अच्छी आमदनी हो सकती है; किरायेदार सहयोग करेंगे। यात्राएं हो सकती हैं; शुभ कार्यों पर खर्च बढ़ सकते हैं। कार्यक्षेत्र में कुछ बाधाएं आ सकती हैं। विदेश जा सकते हैं या वहां निवास हो सकता है।

आपके जीवनसाथी के कार्यक्षेत्र में बाधाएं आ सकती हैं; खर्च बढ़ेंगे, यात्राएं हो सकती हैं। आपके पिता कार्यक्षेत्र में सफल रहेंगे। माता को सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे।

आपके भाई-बहनों के बहुत से मित्र होंगे। बड़े भाई-बहनों के जीवन में परिवर्तन आ सकते हैं, विरासत से लाभ हो सकता है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम रहेगी; रुके कार्य पूरे होंगे, प्रसन्न रहेंगे, उनके गुरु उनसे प्रसन्न रहेंगे। अगर वे कार्यरत हैं तो भाग्यशाली रहेंगे।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए गेहूं, तांबा, घी और गुड़ दान करें।

अंतर्दशा :- केतु - चन्द्र
(19/02/2025 - 20/09/2025)

आपके लिए केतु महादशा 19/03/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में चंद्रमा अंतर्दशा की अवधि 7 मास रहेगी जो आपके लिए 19/02/2025 से प्रारंभ होकर 20/09/2025 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी चंद्र मन, भावनाओं और माता का कारक है।

इस अवधि में आपका स्वास्थ्य उत्तम होगा। जीवनसाथी के धन से धनार्जन हो सकता है। घरेलू जीवन सुखी रहेगा। आप धनी बनेंगे, सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। शिक्षा उत्तम होगी। मधुर वाणी के कारण लोकप्रिय बनेंगे। परिवार सुखी होगा। राजनीति या समाज सेवा में भाग ले सकते हैं। आपके जीवनसाथी धनी बनेंगे उन्हें सब सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आपके पिता के खर्च बढ़ सकते हैं। माता को संतान से सुख मिलेगा; निवेश से लाभ होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए कार्यों में बाधा, स्पर्धा में वृद्धि, बहुत मित्र, धन और संतान से प्रसन्नता का संकेत है।

आपकी संतान की शिक्षा उत्तम होगी, नींव सुदृढ़ बनेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो

अचल संपत्ति क्रय करना उनके लिए लाभकारी हो सकता है।

अगर आप सेवारत हैं तो सफल रहेंगे। परामर्शदाताओं को विरोध का सामना करना पड़ सकता है। व्यापारी भाग्यशाली रहेंगे।

स्वास्थ्य का ध्याम रखना श्रेयस्कर रहेगा। श्वसन तंत्र के रोगों से बचाव करें। अरिष्ट से बचाव के लिए चंद्रमा के मंत्र का जाप करें।

ॐ सों सोमाय नमः

**अंतर्दशा :- केतु - मंगल
(20/09/2025 - 16/02/2026)**

आपके लिए केतु की महादशा 19/03/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में मंगल अंतर्दशा की अवधि 4 मास 27 दिन रहेगी जो आपके लिए 20/09/2025 को प्रारंभ होकर 16/02/2026 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी मंगल शारीरिक शक्ति, ऊर्जा और आत्मविश्वास का कारक है।

इस अवधि में आप धनी बनेंगे। दिल खोल कर पैसा खर्च कर सकते हैं। सफलता में बाधा आ सकती है। पुराना ढांचा बदलेगा, नयापन आएगा। तंत्र-मंत्र में रुचि हो सकती है। कार्यक्षमता उत्तम होगी। विरासत से या जीवनसाथी के धन से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी की आय उत्तम होगी, स्वास्थ्य अच्छा रहेगा, कार्यों में सफलता मिलेगी। आपके पिता की अध्यात्म में रुचि होगी। माता की आय उत्तम होगी, घरेलू सुख अच्छा होगा।

आपके भाई-बहनों के लिए खेलकूद में रुचि, साहित्य से लगाव और संभवतः विवाह का संकेत है। आपके बड़े भाई-बहनों को साझेदारी या व्यापार से लाभ होगा, विवाह हो सकता है।

आपकी संतान सफल होगी, स्पर्धियों पर विजय होगी, आत्मविश्वास में वृद्धि होगी।

अगर आप सेवारत हैं तो तबादला या परिवर्तन हो सकता है। परामर्शदाताओं के कार्य में कुछ परिवर्तन हो सकता है। व्यापारियों का लाभ बढ़ेगा, निवेश लाभप्रद हो सकता है।

शुभत्व में वृद्धि के लिए तंदूर में मीठी रोटी बनाकर उसे दान करें।

**अंतर्दशा :- केतु - राहु
(16/02/2026 - 07/03/2027)**

आपके लिए केतु महादशा 19/03/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में राहु अंतर्दशा 1 वर्ष 18 दिन की होगी जो आपके लिए 16/02/2026 को प्रारंभ होकर 07/03/2027 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी राहु दादा, अचानक घटने वाली घटना और भौतिक सुखों का

कारक है।

इस अवधि में आपका धनार्जन उत्तम होगा, भौतिक सुख-साधन उपलब्ध रहेंगे। आत्मविश्वास में वृद्धि होगी, प्रसिद्धि प्राप्त होगी। अन्य लोग आपकी सहायता करेंगे; आप भी औरों की मदद करेंगे। विवाह हो सकता है। दृढ़प्रतिज्ञा होंगे। विवाहित जीवन में कुछ तनाव हो सकता है। विदेश यात्रा या व्यापार से संबंधित यात्रा संभव है।

आपके जीवनसाथी सफल और लोकप्रिय होंगे। आपके पिता को निवेश से लाभ होगा। माता कार्यक्षेत्र में प्रगति करेंगी, तीर्थयात्राएं होंगी, प्रसिद्ध बनेंगी। आपके भाई-बहनों के लिए प्रभावशाली मित्र, आर्थिक प्रगति के अवसर, समृद्धि, इच्छाओं की पूर्ति, सौभाग्य का संकेत है।

आपकी संतान शिक्षा में प्रसिद्धि प्राप्त करेगी, परीक्षा में सफलता मिलेगी। अगर वे कार्यरत हैं तो विवाह हो सकता है, उच्चपद मिलेगा, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो कुछ परिवर्तन हो सकते हैं, अचानक धनलाभ हो सकता है। परामर्शदाताओं की नींव मजबूत होगी, आय बढ़ेगी। व्यापारी विदेश जा सकते हैं, लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शरीर के ऊपरी भाग के रोगों से बचाव करना श्रेयस्कर रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए हनुमानजी की पूजा करें।

**अंतर्दशा :- केतु - गुरु
(07/03/2027 - 11/02/2028)**

आपके लिए केतु महादशा 19/03/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में बृहस्पति अंतर्दशा की अवधि 11 मास 6 दिन होगी। आपके लिए यह 07/03/2027 को प्रारंभ होकर 11/02/2028 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बृहस्पति ज्ञान, धन और संतान का कारक है।

इस अवधि में आप प्रसिद्ध होंगे। सफलता प्राप्त होगी। शिक्षा उत्तम होगी। सरकार से लाभ और सहायता प्राप्त होंगे। तीर्थयात्रा हो सकती है। सुख-साधन और वाहन उपलब्ध होंगे। माता से उत्तम संबंध होंगे। विविध माध्यमों से धनागम हो सकता है। शत्रुओं पर विजय होगी, स्वास्थ्य उत्तम होगा, माता पक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है।

आपके जीवनसाथी को अचल संपत्ति प्राप्त हो सकती है। आपके पिता की आय उत्तम होगी, वह सुख-साधन संपन्न होंगे, परिवारजनों से उत्तम संबंध होंगे। माता को साझेदारी से लाभ होगा। आपके भाई-बहनों के लिए परिवर्तन का संकेत है।

आपकी संतान को शत्रुओं पर विजय मिलेगी, मामापक्ष के लोगों से लाभ हो सकता है, स्वास्थ्य उत्तम होगा।

अगर आप सेवारत हैं तो भाग्यशाली और धनी होंगे। परामर्शदाता प्रसिद्ध होंगे

; आय अच्छी होगी। व्यापारियों को निवेश से लाभ होगा।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए पीली वस्तुएं जैसे वस्त्र, फूल, दाल, शहद आदि दान करें।

अंतर्दशा :- केतु - शनि
(11/02/2028 - 22/03/2029)

आपके लिए केतु महादशा 19/03/2023 को प्रारंभ हुई थी। इस महादशा में सातवीं अंतर्दशा शनि की होगी जिसकी अवधि 1 वर्ष 9 दिन होगी। यह अंतर्दशा 11/02/2028 को प्रारंभ होकर 22/03/2029 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी शनि भाग्य और सेवा का कारक है।

इस अवधि में आपको अप्रत्याशित लाभ हो सकता है। मितव्ययता द्वारा काफी बचत कर सकते हैं। अदालत में जीत होगी। सम्मान बढ़ेगा, उच्चपद पर आसीन हो सकते हैं। नौकरी या व्यापार में कुछ परिवर्तन हो सकता है। कार्यक्षेत्र की उपलब्धियों के कारण प्रसिद्ध बनेंगे, समृद्धि आएगी। सब काम बन जाएंगे।

आपके जीवनसाथी का धनार्जन उत्तम होगा; उनकी कार्यक्षमता बढ़ेगी, धन संचित होगा। आपके पिता के खर्चे बढ़ सकते हैं, यात्राएं होंगी, परिवर्तन हो सकते हैं। माता को परंपरागत निवेश से लाभ होगा; संतान से सुख मिलेगा। आपके भाई-बहनों के लिए स्पर्धियों पर विजय, अधीनस्थ कर्मचारियों का सहयोग और कार्यों में सफलता का संकेत है।

आपकी संतान की नींव मजबूत होगी; शिक्षा उत्तम रहेगी।

अगर आप सेवारत हैं तो उत्साही होंगे। परामर्शदाताओं की आय बढ़ेगी। व्यापारियों को साझेदारी से लाभ होगा।

मामूली बीमारी बढ़ कर गंभीर हो सकती है अतः सतर्कता आवश्यक है। अरिष्ट से बचाव के लिए काली दाल, काले वस्त्र, तेल, तिल और काली गाय दान करें।

अंतर्दशा :- केतु - बुध
(22/03/2029 - 19/03/2030)

आपके लिए केतु महादशा 19/03/2023 को प्रारंभ हुई। इस महादशा में बुध की अंतर्दशा की अवधि 11 मास 27 दिन होगी जो आपके लिए 22/03/2029 को प्रारंभ होकर 19/03/2030 को समाप्त होगी। अंतर्दशा स्वामी बुध वाणी, बुद्धि, लेखन और तर्कशक्ति का कारक है।

इस अवधि में आप सफल रहेंगे; साझेदार के माध्यम से धनार्जन हो सकता है। व्यापार में लाभ होगा। साझेदारों से विचारों का आदान-प्रदान उत्तम होगा। विवाह हो सकता है। प्रसिद्ध होंगे। ज्ञान के लिए प्रशंसा होगी। कला, कविता, गणित, ज्योतिष और धर्म आदि में रुचि हो सकती है।

आपके जीवनसाथी का धनार्जन उत्तम होगा। आपके पिता को विभिन्न माध्यमों से धनलाभ हो सकता है। माता अचल संपत्ति प्राप्त कर सकती हैं। आपके भाई-बहनों के लिए समृद्धि, धन, यात्रा, पिता से उत्तम संबंधों का संकेत है।

आपकी संतान सफल रहेगी, कला और लेखन में रुचि हो सकती है। अगर वे कार्यरत हैं तो यात्रा हो सकती है, धनी बनेंगे।

अगर आप सेवारत हैं तो विविध माध्यमों से धनार्जन होगा, उच्चाधिकारी प्रसन्न रहेंगे। परामर्शदाताओं की सक्रियता बढ़ेगी। व्यापारियों के लाभ में वृद्धि होगी।

आपका स्वास्थ्य उत्तम रहेगा। शुभत्व में वृद्धि के लिए मूंग की दाल दान में दें।



FUTUREPOINT
Astro Solutions

